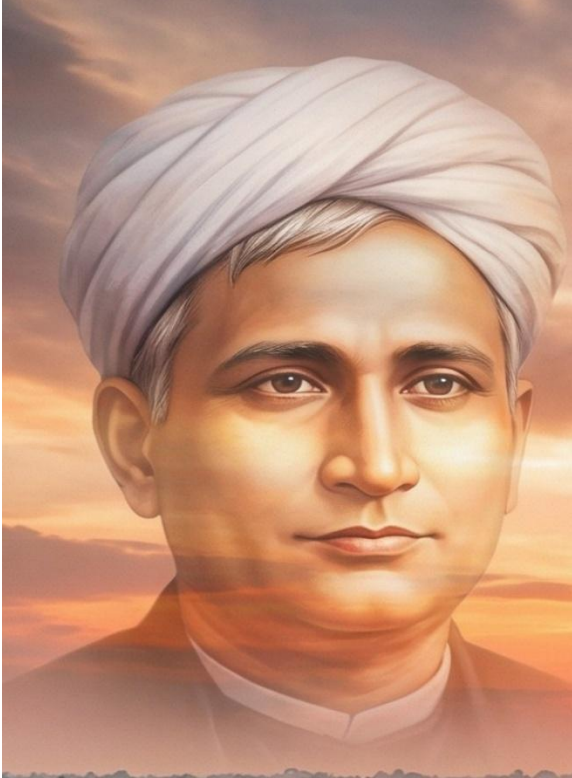


# सर्वेक्षण परिवार

दशम अंक



# सर्वेक्षण परिवार

अंक - दशम्

मार्च - 2026

சர்வேக்ஷன் பரிவாரம்

ಸರ್ವೇಕ್ಷನ್ ಪರಿವಾರ

സരവേഷ പരിവാർ

ਸਰਵੇਕਸ਼ਨ ਪਰਿਵਾਰ

সর্বেক্ষন পরিবার

ସର୍ଭେକ୍ସଣ ପରିବାର

सर्वेक्षण परिवारम्

सर्वेक्षण परिवार

సర్వేక్షన్ పరివార్

સર્વેક્ષણ પરિવાર

सर्वेक्षण परिवार

سارپيکسهان پارگصار

Sarvekshan Pariwar

سر وکشن پریوار



पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता

# सर्वेक्षाण परिवार

अंक - दशम्

मार्च - 2026

बंगभूमि से प्रारम्भ हुआ

**259** बसंत के पार हुआ

भारत का पठारी प्रदेश, या फिर हो हिमालय पहाड़

गंगा का मैदान, या फिर विशाल मरुभूमि थार

तटीय प्रदेश हो, या तंग दर्रे

हमारे सर्वेक्षकों ने किया सबका सर्वे

विविधताओं से भरा हमारा देश

सर्वेक्षण कार्य सुगम नहीं **'शुभेश'**

फिर भी पग-पग का किया सर्वेक्षण

भारत भूमि का सुन्दर, सटीक मानचित्रण

राष्ट्र की सेवा में सतत् समर्पित हमारा **'सर्वेक्षण परिवार'**

पत्रिका का **दशम्** अंक प्रस्तुत है आपको साभार।



पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू - स्थानिक निदेशालय  
भारतीय सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता

# सर्वेक्षण परिवार

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बंधित लेखकों के स्वयं के हैं। भारतीय सर्वेक्षण विभाग का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है। लेखों/रचनाओं की मौलिकता के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे। यह पत्रिका विभागीय वेबसाइट [www.surveyofindia.gov.in](http://www.surveyofindia.gov.in) पर उपलब्ध है।

## संरक्षक

### श्री संजय कुमार

निदेशक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम  
भू-स्थानिक निदेशालय, कोलकाता

## प्रधान सम्पादक

### श्री सोमेन भावल

स्थापना एवं लेखा अधिकारी, पश्चिम बंगाल व सिक्किम  
भू-स्थानिक निदेशालय, कोलकाता

## सम्पादक

### एवं पत्रिका की साज-सज्जा

### श्री शुभेश कुमार

कार्यालय अधीक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम  
भू-स्थानिक निदेशालय, कोलकाता

## सम्पादन सहयोग

### सुश्री बिसाखा साव

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, पश्चिम बंगाल व सिक्किम  
भू-स्थानिक निदेशालय, कोलकाता

### श्री अमरजीत कुमार

प्रवर श्रेणी लिपिक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम  
भू-स्थानिक निदेशालय, कोलकाता

## सम्पर्क-सूत्र

पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय  
भारतीय सर्वेक्षण विभाग, 13 बुड स्ट्रीट, कोलकाता  
ई-मेल: [wbs.gdc soi@gov.in](mailto:wbs.gdc soi@gov.in)

- ❖ संदेश
- ❖ सम्पादकीय
- ❖ वन्दे मातरम्

क्रम सं.	शीर्षक	रचनाकार(श्री/श्रीमती)	पृष्ठ
1.	प्रार्थना	शुभेश कुमार	08
2.	'नुक्ता' वाले शब्द	संजय कुमार	09
3.	मानचित्र से मनचित्र तक	बिसाखा साव	11
4.	शिखर के साधक: राधानाथ सिकदर	शुभेश कुमार	13
5.	मेरी शुचि दीदी	उदित प्रकाश श्रेयांश	14
6.	गरीब बाप की बेटी	शम्पा मुखर्जी	15
7.	मेरे पास कहने को कुछ बाकी	शुभेश कुमार	16
8.	अच्छे विचारों का सच्चा नेतृत्व: हमारे "नेताजी	अमरजीत कुमार	17
9.	सच्चा देवदर्शन	अमृता मण्डल	19
10.	प्रचलित मुहावरे/शब्दों का मूल स्वरूप और वास्तविक अर्थ	शुभेश कुमार	22
11.	भाषा से परे प्यार	बिसाखा साव	27
12.	एक कुर्सी, कई कहानियाँ	देबांजना चक्रबर्ती	28
13.	चाट	शुभेश कुमार	30
14.	एक राष्ट्र और एक कलाकार	सुपर्णा रॉय	31
15.	बहुत एहसान है उनके मुझ पर	बिसाखा साव	32
16.	हे भगवान	शुभेश कुमार	33
17.	ईश्वरचन्द्र विद्यासागर	स्वपन कुमार सरकार	34
18.	राधानाथ सिकदर	सुभाष चन्द्र संतरा	37

➤ कार्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों / समारोहों / फील्ड कार्यों आदि से सम्बंधित झलकियां

### ➤ चित्रांकन:

- |                              |   |   |
|------------------------------|---|---|
| 1. श्री आदित्य दे            | - | सुपुत्र : श्री विश्वजीत दे, अधिकारी सर्वेक्षक       |
| 2. सुश्री प्रीती सरकार       | - | सुपुत्री : श्री स्वपन कुमार सरकार, कार्यालय अधीक्षक |
| 3. श्री रेबान्ता मुखर्जी     | - | सुपुत्र : श्रीमती शम्पा मुखर्जी, कार्यालय अधीक्षक   |
| 4. सुश्री शुचि दास           | - | सुपुत्री : श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक       |
| 5. श्री उदित प्रकाश श्रेयांश | - | सुपुत्र : श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक        |
| 6. सुश्री आरूणि रॉय          | - | सुपुत्री : श्रीमती सुपर्णा रॉय, प्रवर श्रेणी लिपिक  |
| 7. सुश्री अस्मिता मित्रा     | - | सुपुत्री : श्रीमती सीमा मित्रा, भण्डारपाल           |

\*\*\*\*\*

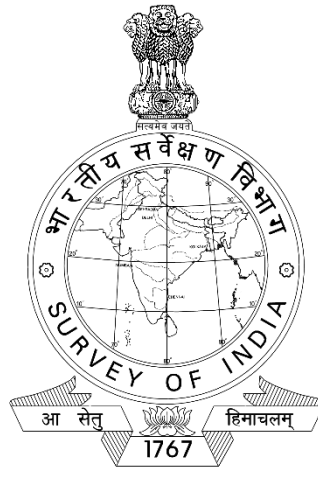
'ग' क्षेत्र अर्थात अहिन्दी भाषी क्षेत्र में कार्यालय की अवस्थिति के कारण व्याकरण की अथवा भाषायी अशुद्धता हो सकती है। अतएव, आदरणीय पाठकवृंद से अनुरोध है कि इस त्रुटि की ओर ध्यान नहीं दें।

संजय कुमार

निदेशक

Sanjay Kumar

Director



संदेश

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

निदेशक का कार्यालय

पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय  
13, वुड स्ट्रीट, कोलकाता-16 (प. बं.)

Survey of India

Office of the Director

WB & Sikkim Geo-spatial Directorate

14, Wood Street, Kolkata-16 (WB)

ई-मेल/E-mail: zone.east.soi@gov.in

“सर्वेक्षण परिवार” का यह दशम अंक पाठकों को बंग भूमि पर जन्मी दो महान विभूतियों से परिचय कराता है। त्रिकोणमितीय सर्वेक्षण के संगणन के दौरान नेपाल-चीन सीमा पर स्थित Peak XV को विश्व की सबसे ऊंची चोटी स्थापित करने वाले, कोलकाता स्थित भारतीय सर्वेक्षण विभाग कार्यालय के कम्प्यूटर पद पर कार्यरत रहे स्वर्गीय राधानाथ सिकदर और प्रसिद्ध समाज सुधारक स्वर्गीय ईश्वर चंद विद्यासागर।

इसी अंक में संस्मरण “भाषा से परे प्यार” सुदूर पूर्व के राज्य मणिपुर के निवासियों के प्रवासियों के प्रति स्नेह की एक झलक दिखाता है। मणिपुर के बारे में आमजन कम परिचित हैं और अशांतग्रस्त समझते हुए वहां यात्रा से बचते हैं। एक अन्य संस्मरण पाठकों को सुदूर दक्षिण स्थित रामेश्वरम से परिचय कराता है। मणिपुर और रामेश्वरम की भौगोलिक स्थिति भारतीय सर्वेक्षण विभाग के राजनैतिक और भौगोलिक मानचित्र में देखना चाहिए और अन्य स्थानों के बारे में जानना चाहिए। वैसे भी “मानचित्र से मनचित्र तक” की यात्रा भौगोलिक अभिव्यक्ति का माध्यम है जिसे व्यक्त करने के लिए भाषा की समझ को सशक्त करने के लिए दो लेख “प्रचलित मुहावरे/शब्दों का मूल स्वरूप और वास्तविक अर्थ” और “नुकता वाले शब्द” शामिल किए गये हैं।

उपरोक्त के अतिरिक्त अन्य कई रूचिकर लेख इस अंक में हैं। आशा है, पाठको को यह अंक खूब पसंद आएंगे।

\*\*\*\*\*

(संजय कुमार)

निदेशक, पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



आदरणीय पाठकवृन्द, सादर नमस्कार।

जैसा कि आप जानते हैं कि हम सब राष्ट्रगीत 'वन्दे मातरम्' की 150वीं वर्षगांठ हर्षोल्लास से मना रहे हैं। सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम् शस्य श्यामलाम् अर्थात् पावन जल से परिपूर्ण, फलों से परिपूर्ण, चन्दन की शीतल हवा से परिपूर्ण और फसलों से हरी भरी हमारी वसुंधरा के गुणों का इतना सुंदर चित्रण इस गीत में किया गया है कि हमारे शीश स्वतः ही वन्दना के भाव लिए झुक जाते हैं। यह बंग भूमि इस कालजयी रचना के गीतकार आदरणीय बंकिमचंद्र चटर्जी की जन्मभूमि भी है। यह हमारा सौभाग्य है कि इस महान भूमि को कर्मभूमि बनाने का हमें सुअवसर मिला है।

इस वसुंधरा की हरियाली और पवित्रता बनी रहे इसके लिए हमें सदैव प्रयासरत रहना चाहिए। वृक्षों को, पौधों को अपने परिवार के सदस्य की भांति मानते हुए उसके संरक्षण पर ध्यान देने से ही हमारी वसुंधरा शस्य श्यामला धरा के रूप में बनी रह सकती है। इसके साथ ही यह हमें ग्लोबल वार्मिंग जैसे गंभीर समस्या से निपटने में भी सहायक हो सकती है। अतएव, हमें पेड़ों के संरक्षण पर विशेष ध्यान देना होगा।

आपके निरंतर स्नेह से हमारी पत्रिका 'सर्वेक्षण परिवार' दशम् सोपान पर पहुंच चुकी है। अब तक यह पत्रिका, वार्षिक अंक के रूप में आपके पास पहुंचती रही है। यह सूचित करते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है कि वर्ष 2025-26 के इस अंक से आपकी पत्रिका 'सर्वेक्षण परिवार' अब अर्द्धवार्षिक हो गई है। अर्थात्, अब एक वर्ष में इसके दो अंक प्रकाशित होंगे। आशा है कि विगत वर्षों की भांति पत्रिका के इस अंक और आगामी अंकों को भी आपका भरपूर स्नेह और समर्थन मिलता रहेगा।

कृपया पत्रिका के बारे में अपने विचारों से हमें अवश्य अवगत कराएं, इससे पत्रिका को हमें और बेहतर बनाने में सहायता मिलेगी। आप अपने विचार निम्नवर्णित पते पर ई-मेल से हमें भेज सकते हैं।

[wbs.gdc soi@gov.in](mailto:wbs.gdc soi@gov.in)

[shubhesh.soi@gov.in](mailto:shubhesh.soi@gov.in)

वन्दे मातरम्  
सुजलां सुफलाम्  
मलयजशीतलाम्  
शस्यश्यामलाम्  
मातरम्।

# वन्दे मातरम्

शुभ्रज्योत्स्नापुलकितयामिनीम्  
फुल्लकुसुमितद्रुमदलशोभिनीम्  
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्  
सुखदां वरदां मातरम् ॥ १ ॥

सप्तकोटि-कण्ठ-कल-कल-निनाद-कराले  
द्विसप्तकोटि-भुजैर्धृत-खरकरवाले,  
अबला केन मा एत बले।  
बहुबलधारिणीं  
नमामि तारिणीं  
रिपुदलवारिणीं  
मातरम् ॥ २ ॥

तुमि विद्या, तुमि धर्म  
तुमि हृदि, तुमि मर्म  
त्वम् हि प्राणाः शरीरे  
बाहुते तुमि मा शक्ति,  
हृदये तुमि मा भक्ति,  
तोमारई प्रतिमा गडी मन्दिरे-मन्दिरे ॥ ३ ॥

त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी  
कमला कमलदलविहारिणी

वाणी विद्यादायिनी,  
नमामि त्वाम्  
नमामि कमलाम्  
अमलां अतुलाम्  
सुजलां सुफलाम्  
मातरम् ॥ ४ ॥

वन्दे मातरम्  
श्यामलाम् सरलाम्  
सुस्मिताम् भूषिताम्  
धरणीं भरणीं  
मातरम् ॥ ५ ॥

# प्रार्थना



श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक  
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

क्या तुमसे कुछ भी छुपा भगवन?  
फिर क्यों ऐसा, है कहाँ अड़चन?

क्या सचमुच, जनम-जनम की बात कोई?  
है क्या पिछले जन्म का पाप कोई?  
या बालपन की बात कोई?  
जब बुद्धि थी मेरी सोई।

हाँ, एक किस्सा मैंने सुन रखा है।  
कहता तुमसे, जो बुन रखा है।  
एक साधू जो ज्ञान प्रवीण थे,  
सत्कर्मरत और ध्यान में लीन थे।

एक दिन राजा के सैनिक आए,  
उन्हें ही चोर समझ पकड़ लाए।  
राजा ने पूछा कई बार,  
पर ध्यान न टूटा एक बार।

गुस्से में हो थर-थर डोला,  
राजन कुपित होकर बोला।  
तत्काल इसे सूली पर चढ़ा,  
अब मेरा और न क्रोध बढ़ा।

सूली पर ज्यों ही टाँग दिया,  
साधू ने ध्यान तोड़ दिया।  
तप के बल से उठ खड़े हुए,  
सब के सब रह गए जड़े हुए।

साधु ने सोचा कई बार,  
नहीं पापकर्म किया एक भी बार।  
फिर दण्ड मिला किस हेतु मुझे,  
फिर दण्ड मिला किस हेतु मुझे।

हे भगवन संशय हरो मेरे,  
हे भगवन संशय हरो मेरे।

भगवान मुस्कुरा कर बोले,  
जैसे कोई राज रहे खोले।

बचपन में जो की मस्ती थी,  
तितली को जो एक पकड़ी थी।

धागे जो बांधे तितली के गले,  
है उसी कर्म का फन्द गले।

प्रभु, तुमने जो उत्तर दिया तभी,  
मन को मेरे भी जंचा नहीं।  
बचपन में ये किस्सा सुनता था,  
तब मन ही मन ये बुनता था।

गर, भेंट कहीं होगी तुमसे  
पूछूँगा, क्या ठीक किया तुमने?

पर तब क्या मैंने ये जाना था,  
क्या तेरी मर्जी पहचाना था।  
मेरे साथ भी बात वही,  
दंडों का आघात वही।

प्रभु मैंने भी, न अपराध जानते की,  
फिर भी, सदैव क्षमा याचना तुमसे की।  
नित भक्ति भाव में बहता हूँ,  
सतकर्म पथ ही बस धरता हूँ।

फिर भी कष्टों से दूर नहीं,  
शांति है कोसों दूर कहीं।  
सबके हित की ही चाह मुझे  
बस तुम रखना अपनी राह मुझे

'शुभेश' की विनती यही प्रभो,  
तुम अपनी शरण की लाज रखो।

मेरे परिवार-कुटुम्ब पर कृपा करो,  
उनके सिर अपने हाथ धरो।  
उन सबको सुख शान्ति तुम दो,  
प्रभु उनके सारे कष्ट हरो।

\*\*\*\*\*

# 'नुक्ता' वाले शब्द



श्री संजय कुमार, निदेशक  
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

हिन्दी व्याकरण और भाषा विज्ञान में 'नुक्ता' बहुत ही महत्वपूर्ण और दिलचस्प है। यह हिन्दी भाषा के विकास का एक बहुत बड़ा प्रमाण है। 'नुक्ता' मूल रूप से अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता है— 'बिंदु'। जब हिन्दी (खड़ी बोली) का विकास हो रहा था, तब अरबी, फ़ारसी और तुर्की भाषाओं के हजारों शब्द हमारे रोज़मर्रा के जीवन में आ गए। इन विदेशी भाषाओं में कुछ ऐसी ध्वनियाँ थीं, जो हमारी देवनागरी लिपि या संस्कृत में नहीं थीं। इन विदेशी ध्वनियों को देवनागरी लिपि में हू-ब-हू लिखने और सही उच्चारण करने के लिए, 19वीं सदी के प्रमुख शिक्षाविद् और साहित्यकार राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' ने देवनागरी के पाँच व्यंजनों के नीचे एक बिंदु (नुक्ता) लगाने की परंपरा शुरू की।

ये पाँच अक्षर हैं: **क, ख, ग, ज, फ**। नुक्ता लगने के बाद ये बन गए— **क़, ख़, ग़, ज़, फ़**।

## नुक्ते वाले वर्णों का उच्चारण :

नुक्ता लगने से अक्षर के उच्चारण का स्थान बदल जाता है। गले और जीभ के विशिष्ट घर्षण से यह आवाज़ निकलती है:

- **क (k) vs क़ (q):** 'क़' का उच्चारण गले के बहुत भीतर (काकल/Uvula) से होता है। जैसे— क़लम, क़यामत।
- **ख (kh) vs ख़ (kh/x):** 'ख़' में गले से एक खुरदरी घर्षण वाली आवाज़ आती है। जैसे— ख़त, ख़राब।
- **ग (g) vs ग़ (gh):** 'ग़' का उच्चारण भी गले के घर्षण से होता है (जैसे गरारे करने की आवाज़)। जैसे— ग़ज़ल, ग़म।
- **ज (j) vs ज़ (z):** 'ज़' जीभ को तालु से छुआकर बोला जाता है, जबकि 'ज़' (Z) दांतों के बीच हवा के घर्षण से। जैसे— ज़मीन, ज़ीरो।
- **फ (ph) vs फ़ (f):** 'फ़' दोनों होठों को मिलाकर झटके से बोला जाता है (जैसे फल), जबकि 'फ़' (F) में नीचे के होंठ और ऊपर के दांतों के बीच से हवा निकलती है। जैसे— फ़िल्म, फ़ैसला।

## नुक्ते के कारण अर्थ में परिवर्तन

कई बार केवल एक नुक्ते के न होने या गलत जगह लग जाने से शब्द का पूरा अर्थ बदल जाता है। इसे समझना सबसे जरूरी है:

शब्द (बिना नुक्ता)	अर्थ (Meaning)	शब्द (नुक्ते के साथ)	अर्थ (Meaning)
राज (Raj)	शासन (Rule)	राज़ (Raaz)	रहस्य (Secret)
सजा (Saja)	सजाना (Decorated)	सज़ा (Saza)	दंड (Punishment)
जरा (Jara)	बुढ़ापा (Old age)	ज़रा (Zara)	थोड़ा सा (A little)
फन (Phan)	साँप का सिर (Hood)	फ़न (Fan)	कला / हुनर (Art/Skill)
खाना (Khana)	भोजन / खाना (Food/Eat)	ख़ाना (Khaana)	जगह / कमरा (जैसे- डाकख़ाना)
खसरा	बीमारी	ख़सरा	जमीन का रिकार्ड
खान	भण्डार	ख़ान	नायक
बेगम	पत्नी	बे़गम	बिना तकलीफ के
जीना	जिंदा रहना	ज़ीना	सीढ़ी
गुल	फूल	ग़ुल	शोर
अर्ज	पृथ्वी	अर्ज़	मांग करना
		अरज़	चौड़ाई

## हिन्दी में नुक्ते के प्रयोग के 3 मुख्य नियम

### 1. केवल विदेशी शब्दों में प्रयोग:

नुक्ते का प्रयोग केवल और केवल अरबी, फ़ारसी, उर्दू या अंग्रेज़ी के शब्दों (Loanwords) में होता है।

- अंग्रेज़ी के शब्द: जीरो (Zero), फ़ेल (Fail), फ़ादर (Father)।

### 2. संस्कृत (तत्सम) या ठेठ हिन्दी शब्दों में प्रयोग वर्जित है:

किसी भी भारतीय मूल के शब्द में नुक्ता कभी नहीं लगता।

- अशुद्ध: फ़ल, सफ़ल, फ़िर, जंजीर।
- शुद्ध: फल (Phal), सफल (Saphal), फिर (Phir), जंजीर (Janjeer)।

### 3. आधुनिक मानक हिन्दी का लचीलापन (NCERT और केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय का नियम):

आधुनिक हिन्दी में मुद्रण (Typing) की सुविधा और सरलता के लिए एक नियम बनाया गया है कि **क़, ख़, और ग़** में से नुक्ता हटाना स्वीकार्य है (अर्थात् आप 'क़लम' को 'कलम' या 'ग़ज़ल' को 'गजल' लिख सकते हैं)।

- **अपवाद (Exception):** लेकिन 'ज़' (z) और 'फ़' (f) का नुक्ता लगाना आज भी **अनिवार्य** माना जाता है, क्योंकि इनके न होने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है और अंग्रेज़ी शब्दों का उच्चारण पूरी तरह बिगड़ जाता है।

यहां ध्यान देने वाली बात है कि 'ड़' और 'ढ़' के नीचे लगने वाला बिंदु नुक्ता नहीं कहलाता। व्याकरण की भाषा में उन्हें 'उत्क्षिप्त व्यंजन' या 'ताड़नजात' कहते हैं, जिनका विकास प्राकृत/अपभ्रंश से हिन्दी में हुआ है।

\*\*\*\*\*

## मानचित्र से मनचित्र तक

सुश्री बिसाखा साव, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी  
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



केवल रेखाओं, सीमाओं और दिशाओं का चित्रण को मानचित्र नहीं कहते हैं, बल्कि यह तो ज्ञान, अनुशासन और सूक्ष्म-पैनी दृष्टि का प्रतीक है। भारतीय सर्वेक्षण विभाग जैसे संस्थानों से जुड़े लोग सामान्यतः मानचित्रण, मापन और तकनीकी कार्यों से पहचाने जाते हैं। पर क्या यह हमारी पहचान का सम्पूर्ण स्वरूप है? शायद नहीं। दरअसल, प्रत्येक व्यक्ति के भीतर एक सृजनशील, रचनात्मक मन होता है - एक ऐसा मन, जो केवल तथ्यों को नहीं समझता, बल्कि उन्हें महसूस भी कर सकता है। यही है वह बिंदु, जहाँ “मानचित्र” की यात्रा “मनचित्र” में परिवर्तित हो जाती है।

हम निश्चित रूप से अपने कार्य में भौगोलिक सीमाओं को चिन्हित, अंकित करते हैं और नदियों, पर्वतों और शहरों को मानचित्र पर उकेरते हैं। परंतु जब वही स्थान हमारे अनुभवों, स्मृतियों और भावनाओं से जुड़ जाता है, तो वे हमारे भीतर एक नई छवि का निर्माण करता है। एक मामूली साधारण-सा स्थान भी किसी के लिए विशेष बन जाता है - क्योंकि उससे जुड़ी होती हैं यादें, कहानियाँ, अनुभूतियाँ और सबसे ज्यादा वहाँ के लोग। यही मनचित्र है - हमारे अंदर का वह संसार, जहाँ भूगोल भावनाओं से मिल जाता है। यह केवल स्थानों का नहीं, वास्तव में अनुभवों का मानचित्र होता है।

यदि हम बंगाल की ओर देखें, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि किसी भी क्षेत्र की पहचान केवल उसके मानचित्र से नहीं होती। बंगाल साहित्य, संगीत, कला और चिंतन की भूमि है। ठाकुर की रचनाओं में जो संवेदना और गहराई है, वह हमें यह सिखाती है कि सृजन केवल कलाकारों का विशेषाधिकार नहीं, परंतु हर व्यक्ति की आंतरिक क्षमता है।

बंगाल का सांस्कृतिक जीवन, विशेषकर यहाँ की “दुर्गो पूजो” इस सृजनात्मकता का जीवंत उदाहरण है। यहाँ हर व्यक्ति किसी न किसी रूप में सृजन से जुड़ा होता है - कोई कलाकार के रूप में, कोई आयोजक के रूप में, और कोई एक संवेदनशील दर्शक के रूप में। यह दर्शाता है कि रचनात्मकता किसी एक क्षेत्र या पेशे तक ही सीमित नहीं है।

ठीक इसी प्रकार, हम जो मानचित्र बनाते हैं, वे सिर्फ तकनीकी दस्तावेज नहीं हैं। उनमें हमारी एकाग्रता, परिश्रम और सूक्ष्मता के साथ-साथ हमारी दृष्टि भी शामिल होती है। और जब वही व्यक्ति लेखन, कविता या अन्य रचनात्मक माध्यमों में अपने विचार व्यक्त करता है, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि सृजनशीलता हर मन में विराजमान है- बस उसे अभिव्यक्ति का अवसर चाहिए। और “सर्वेक्षण परिवार” हमें ये मौका मिलता है।

“मानचित्र से मनचित्र तक” की यह यात्रा हमें समझाती है कि हम केवल अपने कार्य तक सीमित नहीं हैं। हम सोच भी सकते हैं, और महसूस भी कर सकते हैं। हम सृजन कर सकते हैं। यह यात्रा बाहरी दुनिया से आंतरिक दुनिया की ओर जाने की है - जहाँ हर रेखा एक विचार बन जाती है और हर स्थान एक अद्भुत अनुभूति।

अंत में केवल यही कहूँगी कि मानचित्र हमें दिशा देते हैं, परंतु मनचित्र हमें पहचान देते हैं। हम भले ही मानचित्रण से क्यूँ न जुड़े हों, परंतु हमारे भीतर का सृजनशील मन हमें एक व्यापक और गहन आयाम प्रदान करता है। यही इस यात्रा का सार है-

मानचित्र से आगे की ओर बढ़कर, मनचित्र तक पहुँचना।

\*\*\*\*\*

# शिखर के साधक: राधानाथ सिकदर

बंगभूमि का अद्भुत लाल  
गणित में था जो बेमिसाल  
जोरासांको का वह बंग परिवार  
1813 में जिसके जन्म से हुआ निहाल

राधानाथ सिकदर महाज्ञानी  
जिसकी मेधा का नहीं कोई सानी  
त्रिकोणमितीय सूत्रों को  
जिसने अस्त्र बनाया  
पुण्य धरा को मापने का  
पावन संकल्प उठाया

दुर्गम पर्वत और विशाल पठार  
सभी बाधाओं को कर दरकिनार  
बतला दिया कि सबसे ऊंचा कौन  
कंचनजंघा शिखर नहीं सिरमौर

खोला पीक पंद्रह का रहस्य  
जो अब तक था अजेय दुर्धर्ष  
जहां किसी के कदम न पहुंचे थे  
जिसे सब दूर से ही बस निरखे थे

आंकड़ों के महासागर में गोता लगाकर  
दृढ संकल्प के साथ कागज कलम उठाकर  
इस सर्वोच्च शिखर की सटीक ऊंचाई बताई  
पूरी दुनिया ने दांतो तले ऊंगली दबाई

श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक  
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



महान त्रिकोणमितीय सर्वेक्षण के  
इस धीर, वीर, ज्ञानी मतवाले  
दुनिया के सर्वोच्च शिखर को  
गुमनामी से उजाले में लाने वाले

इस भारत माँ के सपूत को ही  
सबने गुमनामी में धकेल दिया?  
कहां तो दिल में जगह देनी थी,  
उसे इतिहास के पन्नों से भी मिटा दिया?

भले ही शिखर का नाम किसी और को मिला  
उन्होंने निःस्वार्थ भाव से अपना कर्म किया  
पर 'शुभेश' ऐसी महान विभूतियों पर  
हम सीना ठोक गर्व करें  
भारतीय मानचित्रण के उस सच्चे नायक के  
चरणों में श्रद्धा सुमन धरें।

\*\*\*\*\*

# मेरी शुचि दीदी



मेरी शुचि दीदी सबसे प्यारी  
है मम्मी की राजदुलारी  
और पापा की राजकुमारी

खेल-खेल में मुझे पढाती  
सब बच्चों के मन को भाती  
दिन-भर तो स्कूल में रहती  
जाने कितने पाठ है पढती

जैसे ही उसे समय है मिलता  
मैं, खेलने उसके संग निकलता  
जम कर खेलूं, धूम मचाऊं  
सांझ परे फिर लौट के आऊं

पर, कभी-कभी उसे डांट है पड़ता  
मुझको बहुत बुरा है लगता  
दीदी की आंखों में आंसू  
देख नहीं मैं कभी हूं सकता

मुझको तो गुस्सा आ जाता  
पर छोटा हूं, तो डर जाता  
मेरी दीदी प्यारी ऐसी  
और कोई नहीं है वैसी

श्री उदित प्रकाश श्रेयांश, सुपुत्र: श्री शुभेश कुमार  
कार्यालय अधीक्षक, पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

यूं तो करते हम भी लड़ाई  
हो जाती जब तुनक तुनाई  
पर अगले पल ही हम मिल जाते  
लड़ाई - झगड़े सब भूल जाते

कोई डांट न पाएगा अब  
कोई रूला न पाएगा अब  
उदित खड़ा है सामने देखो  
डांट-डपट अब दूर ही रखो

\*\*\*\*\*

# गरीब बाप की बेटी



श्रीमती शम्पा मुखर्जी, कार्यालय अधीक्षक  
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

गरीब बाप की बेटी मैं एक  
गरीब बाप की बेटी हुं,  
मुट्टी भर चावल खाकर  
जिंदगी अपनी जी रही हूँ ।  
फटे-पुराने और नंगे  
कपड़ों में दिन कट गए,  
पेट के भूख की दर्द  
आज भी नहीं मिट गये ।  
खाना जुटोने के लिए पिता  
अपने शरीर का पसीना बहाता है,  
गरीब होने की कीमत आज भी  
वह इस दुनिया को चुकाता है ।  
बाप का क्या गुनाह है ?  
जो नीच कुल होने का भूल चुकाना है ।  
हाड़-मांस से ही बना हर इंसान है  
ऊँच-नीच का भेद भूल जाने ही इंसानियत है,  
यह सीख सबको अब सिखाना हैं ।

\*\*\*\*\*

# मेरे पास कहने को कुछ बाकी...



श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक  
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

तुमसे कुछ भी छुपा हो, तो दिखाऊं  
तू ना जाने सब, तो बताऊं  
मेरे पास कहने को कुछ बाकी... तो सुनाऊं

तुम हो सर्वत्र...तुम स्वयं सर्वज्ञ  
फिर मुंह खोलकर क्या-क्या बताऊं

यदि तुझे लगे मैं दीन मूढ, मतिहीन  
अधर्मी, पापी या मलीन  
तो फिर वही करो, जो कहे तेरा मन प्रवीण

यदि तुम ही मौन धर लोगे  
हमसे ही मुंह मोड़ लोगे  
तो किससे कहेंगे.....और क्या ही कहेंगे  
कहां जाएंगे.....और क्या ही करेंगे  
जैसे तुम रखोगे, प्रभु वैसे हम रहेंगे

बात तो मेरी है ही नहीं,  
मैं तो आज हूं, कल नहीं  
पर तुम तो नित्य हो,  
सदा, सर्वदा, सर्वकाले

इसलिए प्रभु अपने शरण की लाज रखो...!  
इस पतित 'शुभेश' पर थोड़ी तो दयादृष्टि रखो..?

\*\*\*\*\*

# अच्छे विचारों का सच्चा नेतृत्व: हमारे “नेताजी”

अच्छे विचार, आदर्श, गंभीरता और सहजता का मेल ही जीवन का सही मोल

श्री अमरजीत कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक  
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



है। आज के समय में, जब दिखावा और स्वार्थ धीरे-धीरे समाज में अपनी जगह बना रहे हैं, तब कुछ व्यक्तित्व ऐसे भी होते हैं जो अपने जीवन से सच्चे मूल्यों की मिसाल कायम करते हैं। यह लेख ऐसे ही एक इंसान की कहानी है, जिन्होंने अपने विचारों, आदर्शों और स्वाभिमान से कभी समझौता नहीं किया। उनकी सादगी ही उनकी सबसे बड़ी पहचान थी। आज के दौर में बिना चप्पल के सड़क पर चलना असामान्य लगता है, लेकिन स्वर्गीय बुटेली सहनी, जिन्हें हम सब प्यार से “नेताजी” कहते थे, 80 वर्ष की उम्र में भी आधुनिकता के दिखावे से दूर रहकर सादगी और जीवन-मूल्यों को ही अपना मार्ग बनाए रहे।

यह कहानी बिहार के मेरे उस छोटे से गाँव की है, जहाँ आज भी जातिवाद की जड़ें पूरी तरह खत्म नहीं हुई हैं। गाँव में एक तालाब है, जिसे लोग “दैत्य पोखर” कहते हैं। जिन लोगों के पास अपनी जमीन नहीं थी, वे उसी तालाब के किनारे फूस के घर बनाकर रहने लगे। धीरे-धीरे वहाँ लगभग 1500 लोगों की आबादी बस गई, लेकिन बुनियादी सुविधाओं का पूरी तरह अभाव था। पीने के पानी को छोड़कर बाकी सभी कामों के लिए लोग उसी गंदे पानी पर निर्भर थे। परिणामस्वरूप हैजा और कॉलरा जैसी बीमारियाँ अक्सर फैलती रहती थीं और कई लोग असमय काल के गाल में समा जाते थे। आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण उनके पास समुचित इलाज के साधन भी नहीं थे। अभाव, बीमारी और असुरक्षा के बीच जीवन किसी तरह आगे बढ़ रहा था।

इन्हीं कठिन परिस्थितियों में मल्लाह समुदाय से आने वाले नेताजी एक उम्मीद बनकर उभरे। उन्होंने कभी किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया, बल्कि सभी वर्गों के लोगों को साथ लेकर चलने का प्रयास किया। उनके निस्वार्थ प्रयासों का ही परिणाम था कि उस उपेक्षित क्षेत्र में स्वच्छ पानी की व्यवस्था हुई, एक प्राथमिक विद्यालय की स्थापना हुई, सामुदायिक भवन बना, पक्की सड़कें बनीं और लोगों के रहने के लिए पक्के मकानों की व्यवस्था भी सुनिश्चित की गई। ये परिवर्तन एक दिन में नहीं आए, बल्कि छोटे-छोटे जनआंदोलनों, लोगों को संगठित करने और स्थानीय समस्याओं को लेकर सरकारी दफ्तरों से निरंतर संवाद एवं सहयोग के प्रयासों का परिणाम थे। लगभग 25 वर्षों तक उन्होंने स्थानीय स्तर पर लोगों की आवाज बनकर संघर्ष किया और समाज के कमजोर वर्गों को सम्मानजनक जीवन देने की दिशा में निरंतर कार्य करते रहे।

मुझे आज भी वह दिन स्पष्ट रूप से याद है, जब दसवीं कक्षा का परिणाम आने के बाद मैं घर के दरवाजे पर उदास बैठा था। नेताजी वहाँ से गुजरे और सहजता से पूछ बैठे— “बौआ, कैसा रहा रिजल्ट?” मैंने संकोच से कहा— “नेताजी, फर्स्ट डिवीजन तो आया है, लेकिन दोस्तों के अंक मुझसे ज्यादा हैं।”

मेरी बात सुनकर वे हल्के से मुस्कुराए और बड़ी सरलता से बोले— “बौआ, जीवन की सफलता केवल अंकों से नहीं, बल्कि कर्मों से तय होती है। तुमने मेहनत की है, यह सबसे बड़ी बात है। हर बार जांचने वाले की नजर सही हो, यह जरूरी नहीं होता। तुम बस अपना कर्म करते रहो। समय सबसे बड़ा न्यायाधीश है—वही एक दिन तुम्हारी असली काबिलियत को पहचान देगा।”

उनकी यह बात उस समय भले ही एक सांत्वना जैसी लगी हो, लेकिन आज समझ में आता है कि वह जीवन का गहरा सत्य था। जब मैं उनके जीवन को देखता हूँ, तो लगता है कि उन्होंने जो कहा, वही स्वयं जिया। उन्होंने समाज के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया, अपनी निजी संपत्ति तक जरूरतमंदों में बाँट दी, लेकिन विडंबना यह रही कि वे स्थानीय स्वशासन की औपचारिक सत्ता तक नहीं पहुँच पाए, जिसके वे वास्तविक हकदार थे।

यह हमें एक महत्वपूर्ण सच्चाई की ओर भी संकेत करता है कि हर अच्छे कर्म को पहचानने के लिए समाज का दृष्टिकोण भी उतना ही परिपक्व होना चाहिए। कई बार समाज तात्कालिक लाभ, चमक-धमक और जातिगत समीकरणों में उलझकर अपने सच्चे नायकों को वह स्थान नहीं दे पाता, जिसके वे वास्तव में हकदार होते हैं। आज जब “नेता” शब्द का अर्थ कई बार केवल पद और शक्ति तक सीमित हो गया है, तब नेताजी जैसे व्यक्तित्व हमें सच्चे नेतृत्व की परिभाषा याद दिलाते हैं। उन्होंने चुनाव भले ही न जीता हो, लेकिन लोगों के दिलों में जो स्थान उन्होंने बनाया, वह किसी भी पद से कहीं बड़ा है। मेरे लिए नेताजी केवल एक नाम नहीं, बल्कि एक जीवंत आदर्श हैं—ऐसा आदर्श, जो यह सिखाता है कि सच्ची सेवा, ईमानदारी और समर्पण से ही समाज में वास्तविक परिवर्तन लाया जा सकता है।

\*\*\*\*\*

# सच्चा देवदर्शन

सुश्री अमृता मण्डल, प्रवर श्रेणी लिपिक  
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



यह कहानी है रामेश्वरम की। कहानी उस रामेश्वरम की, जहाँ प्रकृति स्वयं पुराणों की साक्षी देती है। कहानी उस रामेश्वरम की, जिसके सीने में हिंदू-मुस्लिम सांप्रदायिक सौहार्द की भावना बसती है—जिसके बारे में हम भगवानतुल्य कलाम जी की 'विंग्स ऑफ फायर' पढ़ते हुए बड़े हुए। यही कारण है की उस रामेश्वरम की यात्रा का अवसर मिलते ही मैं स्वाभाविक रूप से रोमांचित हो गई। किताबों और यूट्यूब से प्राप्त ज्ञान को वास्तविक अनुभव से समृद्ध करने के लिए, इस वर्ष जनवरी में मैं अपनी माँ को लेकर निकल पड़ी रामेश्वरम की ओर।

सुबह रामेश्वरम पहुँचकर, पूरे दिन वहाँ के अन्य दर्शनीय स्थलों की यात्रा करने के बाद, मैं, मेरी माँ और हमारे 5-6 परिचित लोग शाम में करीब 6:30 बजे ज्योतिर्लिंग दर्शन के लिए मंदिर में प्रवेश किए। मंदिर में प्रवेश करते ही उसकी सुंदर नक्काशी और कारीगरी देखते-देखते हम मंत्रमुग्ध हो गए और देखते ही देखते काफ़ी आगे तक चले गए और थोड़ा आश्चर्य भी हुए कि इतने प्रसिद्ध मंदिर में इतनी कम भीड़! कुल मिलाकर सिर्फ 10-12 लोग?! लेकिन थोड़ा और आगे जाकर देखा तो पता चला कि असली लाइन तो अब शुरू हुई थी। उसमें अनेक भक्त थे, जो 22 कुंडों के पवित्र जल में स्नान करके, गीले शरीर के साथ देवदर्शन की आशा में खड़े थे। उनमें काले वस्त्र पहने कई अय्यप्पन (भगवान अय्यप्पा के भक्त) भी थे और कई तृतीय लिंग के लोग भी। दक्षिण भारत की विविध संस्कृतियों का आनंद लेते हुए और लाइन में खड़े मेरे कुछ सहयात्रियों से रामेश्वरम की पौराणिक कथाएँ सुनते-सुनते हम काफ़ी आगे बढ़ गए और मन में आशा जागी कि अब बस थोड़ा रास्ता और। उसके बाद ही बहुप्रतीक्षित देवदर्शन! पर उसी "थोड़ा रास्ता" पार करने के दौरान ही आई विपत्ति। जहाँ देवदर्शन में सहायता करने के लिए आना चाहिए था देवदूत, वहाँ उपस्थित हुए मंदिर प्रबंधन द्वारा नियुक्त टिकट परीक्षक। जिसने बताया कि बिना 100 रुपये के टिकट लिए उस लाइन में और आगे बढ़ना संभव नहीं। तब समझ में आया वह रास्ता इतना वीरान क्यों था। मैं पड़ी बड़ी मुश्किल में। मैं और माँ अपना बैग, जूता सब होटल में ही जो छोड़ आए थे। मंदिर बंद हो जाने की आशंका से जल्दबाज़ी में मैं अपना मनीबैग भी लाना भूल गई थी। जेब टटोला तो कुल मिलाकर 150 रुपए! कैसे लूँ अब दो टिकटें? उधर हमारे साथ आए वे 5-6 लोग अपना-अपना टिकट लेकर पल भर में गायब हो गए।

किंकर्तव्यविमूढ़ होकर मैंने निर्णय लिया कि माँ के लिए 100 रुपये का टिकट लेकर उन्हें विशेष दर्शन के लाइन

से आगे भेज दूँ और खुद वापस सामान्य दर्शन की लाइन में खड़ी हो जाऊँ। तदानुसार, माँ के तीव्र विरोध के बावजूद उन्हें विशेष दर्शन की लाइन में भेज दिया।

क्षण भर में ही हम दोनों के रास्ते अलग हो गए और माँ मेरी नजरों से ओझल हो गई। माँ के पास न थे पैसे, न मोबाइल फोन। साथ में भाषा की समस्या अलग। इतने विशाल मंदिर में, जहाँ प्रवेश और निकास के कई सारे द्वार हैं, वहाँ इतनी भीड़ में माँ को कैसे ढूँँ - इसी चिंता से मैं व्याकुल होकर भागते हुए सामान्य दर्शन की लाइन में जा खड़ी हुई। उस वक्त मेरे मन में न तो देवदर्शन की इच्छा थी, न ही था आसपास के सौंदर्य का आनंद लेने का उत्साह, थी तो केवल चिंता और बेचैनी - कब और कैसे माँ को ढूँँ ।

सामान्य दर्शन के लाइन में खड़े होते ही मेरी एक ही कोशिश रही—कैसे जल्दी आगे बढ़ा जाए। सामने दूर-दूर तक सिर्फ भीड़ से भरी लंबी लाइन। मैं थोड़ा जबरदस्ती ही लाइन में घुसकर अपने सामने लाइन में खड़े 10-12 लोगों को पीछे छोड़कर दोनों तरफ लोहे की रेलिंग वाले संकरे रास्ते से लाइन में आगे बढ़ती रही। पर कुछ ही क्षण में मेरी गति थम गई। पहला रोक आया एक समूह राजस्थानी महिलाओं से। भीड़ इतनी थी कि रास्ता काटकर आगे जाना असंभव था। उनमें से एक मध्यवयीन राजस्थानी महिला ने क्रोधित होकर मेरा रास्ता रोकते हुए कहा, "क्या रे! कहाँ घुसने की कोशिश कर रही हो? ठीक से खड़ी रहो लाइन में।" डरी हुई मैं किसी तरह बोली, "मेरी मम्मी मुझसे अलग हो गई।" यह सुनते ही उनका क्रोध शांत हो गया और उन्होंने और उनके साथ की बाकी महिलाओं ने बहुत स्नेह से मुझसे पूछा, "बेटी, तुम कैसे अलग हो गई मम्मी से? इतना बड़ा मंदिर और इतनी भीड़ में कभी भी अपने लोगों से अलग नहीं होना है।" संक्षेप में मैंने उन्हें माँ से मेरी अलग होने की कहानी बताई। उन्होंने बहुत प्यार से मुझे कहाँ, "चिंता मत करो बेटी। हमलोग हैं। तुम खोओगी नहीं। मम्मी मिल जाएगी।" उनके समूह में एक ऐसी वृद्ध महिला भी थी जो खुद ठीक से चल नहीं पा रही थी, फिर भी मैं खो जाऊँ यह डर से मेरा हाथ एक पल के लिए भी नहीं छोड़ रही थी। ऐसे चलते चलते मैंने उन्हें बताया कि मैं खुद की नहीं, बल्कि मम्मी की खो जाने की चिंता से परेशान हूँ। साथ ही मैंने विनम्रता से पूछा, "आंटी, क्या मैं आगे बढ़ सकती हूँ?" वे थोड़ी चिंता से मुझे पूछी, "तुम अकेली जा पाओगी बेटी?" इससे पूर्व मेरे मन में सिर्फ बेचैनी और व्याकुलता थी। अब उसमें जुड़ गई अचंभा और श्रद्धा भी। मैं उनको आश्चस्त करके एवं उनका आशीर्वाद लेके आगे बढ़ी और मेरा रास्ता रोकने वाली वह राजस्थानी महिला अपने सामने खड़े अजनबी दर्शनार्थियों से कहती रही, "उसे जाने दीजिए। उसकी मम्मी उससे अलग हो गई।" सामने 20-30 अय्यप्पनों को पीछे छोड़कर लाइन में आगे जाते समय जब फिर से रोक आया तब तुरंत ही वे अय्यप्पनों से संदेश आया "उसे जाने दीजिए।" इतनी भीड़ के बीच कैसे अपने आप एक अदृश्य ग्रीन कॉरिडोर बन गया ! लाइन में अय्यप्पनों के साथ-साथ मुझे ओडिशा और बिहार से आए दर्शनार्थी भी मिले। उतनी लंबी लाइन में मेरे साथी बदलते रहें पर जब भी कभी रोक आया तुरंत पीछे से संदेश आया "उसे जाने दीजिए।" इसी तरह आश्चर्यजनक रूप से उस लंबी लाइन में इतने खड़े लोगों की भीड़ में मुझे कहीं भी खड़ा नहीं होना पड़ा। ऐसे देवयोग से, बहुत ही कम समय में लंबी लाइन पार कर मैं ज्योतिर्लिंग दर्शन में सफल हुई और थोड़े ही समय में मन्दिर से बाहर मुझे मेरी मम्मी भी मिल गई।

होटल वापसी के बाद, जब बाकी लोग अपने ज्योतिर्लिंग दर्शन के संक्षिप्त अनुभव का वर्णन करते करते मुझसे पूछे "तुम ठीक से दर्शन कर पायी उतनी भीड़ में?" तब मैंने बताया कि देवदर्शन का सौभाग्य तो मुझे बहुत लंबे समय तक हुआ। ज्योतिर्लिंग दर्शन तो कुछ सेकंड का ही था। पर असली देवदर्शन तो मुझे उस लंबी लाईन में ही हो गया था जब राजस्थान की उन बुजुर्ग महिलाओं ने अपने शारीरिक कष्टों को नज़रंदाज़ करके अपना प्यार उंडेल दिया था एक अंजान उद्विग्न युवती के प्रति। देवदर्शन हुआ उन अय्यप्पनों में जिन्होंने अपने कठिन व्रत में लंबे समय तक उतनी लंबी लाईन में खड़ा होने के बाद भी एक ऐसी लड़की को आगे जाने दिया जो नियमों का पालन किए बिना पीछे से आकर लाईन के अंदर घुस गई। देवदर्शन का अहसास हुआ उन ओडिया, बिहारी सहयात्रियों के दिल से निकले 'उसको जाने दीजिए' जैसे शब्द सुनकर।

अगली सुबह, रामेश्वरम के समुद्र तट पर बैठकर, पिछली रात की यादों में खोई, मैंने महसूस किया कि लोग अक्सर आंचलिकता को प्राथमिकता देते हुए आपस में विभाजन पैदा करते हैं। कल मैंने क्षेत्रीयता के प्राथमिकता से परे पूर्वी भारत की एक सामान्य, अजनबी बंगाली-युवती की मुसीबत में मदद करने वाली उन राजस्थानी महिलाओं को देखा, दक्षिण भारतीय अय्यप्पनों या मेरे बिहारी और उड़िया साथी लोगों को स्नेह और प्रेम देते देखा। यह महसूस किया कि भले भारत के विभिन्न राज्यों के लोगों की खान-पान की आदतें, पहनावा, भाषा और जीवनशैली कितनी भी अलग हो पर वह विविधता कभी भी उनके बीच स्नेह के मार्ग में बाधा नहीं बन सकी। साथ ही मैंने महसूस किया कि कभी-कभी भूल जाना भी अच्छा है। क्योंकि अगर मैं कल अपना मनीबैग लाना नहीं भूलती तो शायद मेरा देवदर्शन इतना सार्थक और यादगार भी नहीं बनता।

\*\*\*\*\*

# प्रचलित मुहावरे/शब्दों का मूल स्वरूप और वास्तविक अर्थ



श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक  
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

जब कोई पुराना या

कठिन शब्द आम बोलचाल से बाहर हो जाता है, तो आम जनता अपनी सुविधा और समझ के अनुसार उससे मिलता-जुलता कोई जाना-पहचाना शब्द गढ़ लेती है। इसे भाषा विज्ञान में 'लोक-व्युत्पत्ति' (Folk Etymology) या उच्चारण दोष के कारण हुआ परिवर्तन कहा जाता है। ऐसे कई मुहावरे हैं जो आज अपने अशुद्ध रूप में ही सबसे ज़्यादा लोकप्रिय हैं। आइए ऐसे कुछ मुहावरों से आपका परिचय कराते हैं:

## 1. अक्ल बड़ी या भैंस

- **प्रचलित (अशुद्ध) रूप:** अक्ल बड़ी या भैंस।
- **शुद्ध (मूल) रूप:** अक्ल बड़ी या वयस।
- **अर्थ:** शारीरिक बल या उम्र से ज़्यादा महत्व बुद्धि का होता है।
- **परिवर्तन का कारण:** मूल कहावत में संस्कृत का शब्द 'वयस' था, जिसका अर्थ होता है 'उम्र' (Age) (इसी से 'वयस्क' यानी Adult शब्द बना है)। मूल सवाल यह था कि व्यक्ति की बुद्धि बड़ी होती है या उसकी उम्र? लेकिन आम बोलचाल में 'वयस' शब्द का प्रयोग कम हो गया। लोगों ने उच्चारण की समानता के कारण 'वयस' को पहले 'वैस' किया और फिर वह बदलकर 'भैंस' हो गया। आज हम बुद्धि की तुलना एक विशाल जानवर से करते हैं, जो तार्किक रूप से थोड़ा अजीब है, लेकिन यही प्रचलित है।

## 2. किस्मत मेहरबान तो गधा पहलवान

- **प्रचलित (अशुद्ध) रूप:** किस्मत मेहरबान तो गधा पहलवान।
- **शुद्ध (मूल) रूप:** किस्मत मेहरबान तो गदा पहलवान।
- **अर्थ:** भाग्य साथ दे तो एक कमजोर या दरिद्र व्यक्ति भी ताकतवर और सफल हो जाता है।
- **परिवर्तन का कारण:** यहाँ फ़ारसी भाषा का शब्द 'गदा' इस्तेमाल हुआ था, जिसका अर्थ होता है 'भिखारी' या 'फ़कीर'। मूल कहावत का अर्थ था कि अगर किस्मत अच्छी हो तो एक भिखारी भी पहलवान बन सकता है। क्योंकि हिन्दी भाषी लोग फ़ारसी के 'गदा' शब्द से ज़्यादा परिचित नहीं थे, इसलिए उन्होंने इसे जाने-पहचाने शब्द 'गधा' से बदल दिया।

### 3. धोबी का कुत्ता, न घर का न घाट का

- प्रचलित (अशुद्ध) रूप: धोबी का कुत्ता, न घर का न घाट का।
- शुद्ध (मूल) रूप: धोबी का कुतका, न घर का न घाट का।
- अर्थ: ऐसा व्यक्ति जिसका कहीं कोई एक निश्चित ठिकाना या महत्व न हो।
- परिवर्तन का कारण: 'कुतका' लकड़ी के उस भारी डंडे (मुंगरी) को कहते हैं जिससे धोबी घाट पर कपड़े पीटते हैं। वह डंडा इतना भारी होता है कि धोबी उसे रोज़ घर नहीं लाता, वह घाट पर ही पड़ा रहता है; यानी वह न घर के काम आता है और घाट पर भी लावारिस पड़ा रहता है। समय के साथ 'कुतका' शब्द अप्रचलित हो गया और लोगों ने इसे आवारा घूमने वाले 'कुत्ते' से जोड़ दिया।

### 4. होनहार बलवान के होत चीकने पात

- प्रचलित (अशुद्ध) रूप: होनहार बलवान (या वीरवान) के होत चीकने पात।
- शुद्ध (मूल) रूप: होनहार बिरवान के होत चीकने पात।
- अर्थ: जो व्यक्ति आगे चलकर महान या सफल होने वाला होता है, उसके गुण बचपन से ही दिखाई देने लगते हैं।
- परिवर्तन का कारण: इस अवधी/ब्रज कहावत में मूल शब्द 'बिरवान' है, जिसका अर्थ होता है 'छोटा पौधा' (Sapling)। एक अच्छे और स्वस्थ पेड़ के लक्षण उसके छोटे पौधे के चिकने पत्तों से ही पता चल जाते हैं। आज-कल लोग 'बिरवान' का अर्थ न जानने के कारण इसे 'बलवान' या 'वीरवान' (वीर व्यक्ति) बोल देते हैं, जिससे इस कहावत का प्राकृतिक और काव्यात्मक सौंदर्य खत्म हो जाता है।

### 5. बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद

- प्रचलित (अशुद्ध) रूप: बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।
- शुद्ध (मूल) रूप: बंजार क्या जाने अदरक का स्वाद।
- अर्थ: मूर्ख या गुणहीन व्यक्ति किसी अच्छी चीज़ की कद्र नहीं कर सकता।
- परिवर्तन का कारण: कई भाषाविदों का मानना है कि इसका मूल शब्द 'बंजार' (बंजारा/घुमंतू व्यापारी) था। प्राचीन काल में बंजारे सूखे मसालों (जैसे नमक, हल्दी) का व्यापार करते थे, लेकिन ताज़े 'अदरक' का पाक-कला (Cooking) में क्या महत्व है, यह उन्हें नहीं पता होता था। समय के साथ 'बंजार' का उच्चारण बिगड़ा और यह 'बंदर' बन गया, जो आज हर किसी की जुबान पर है।

कुछ और ऐसे ही बेहद दिलचस्प मुहावरे हैं, जो आज अपने मूल रूप या अर्थ से पूरी तरह भटक चुके हैं और अशुद्ध रूप में ही 'शुद्ध' मान लिए गए हैं:

## 1. नीम हकीम खतरे जान (या खतरा-ए-जान)

- **प्रचलित (अशुद्ध) धारणा:** आजकल लोग इसे 'नीम' के पेड़ से जोड़ लेते हैं। उन्हें लगता है कि कोई ऐसा वैद्य (हकीम) जो केवल नीम के पत्ते या देसी जड़ी-बूटियाँ देता है, वह जान के लिए खतरा है।
- **शुद्ध (मूल) रूप:** यहाँ 'नीम' किसी पेड़ का नाम नहीं है। यह फ़ारसी भाषा का शब्द 'नीम' है, जिसका अर्थ होता है 'आधा' (Half या Semi)। (इसी से 'नीम-गरम' यानी हल्का/आधा गरम या 'नीम-पागल' जैसे शब्द बनते हैं)।
- **अर्थ और परिवर्तन का कारण:** मूल कहावत का अर्थ था—"आधा-अधूरा ज्ञान रखने वाला मरीज की जान के लिए खतरा होता है।" लेकिन आम जनता फ़ारसी के 'नीम' शब्द का अर्थ भूल गई और इसे अपने जाने-पहचाने 'नीम के पेड़' से जोड़ लिया।

## 2. अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता

- **प्रचलित (अशुद्ध) रूप:** अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।
- **शुद्ध (मूल) रूप:** अकेला चना भाड़ नहीं झोंक सकता।
- **अर्थ और परिवर्तन का कारण:** 'भाड़' का अर्थ होता है वह भट्टी जहाँ चने या मक्का भूने जाते हैं। भट्टी में ईंधन (लकड़ी या पत्ते) डालने और आग तेज़ करने की प्रक्रिया को 'झोंकना' कहते हैं। मुहावरे का मूल अर्थ था कि एक अकेला छोटा सा चना पूरी भट्टी की आग को नहीं जला (झोंक) सकता। लेकिन समय के साथ शहरीकरण के कारण लोगों ने 'झोंकना' शब्द का अर्थ भुला दिया। उन्हें लगा कि भट्टी (भाड़) को फोड़ने की बात हो रही है, जबकि एक छोटे से चने के द्वारा भट्टी 'फोड़ने' (Bursting) का कोई तार्किक आधार ही नहीं है।

## 3. घर की मुर्गी दाल बराबर

- **प्रचलित (अशुद्ध) रूप:** घर की मुर्गी दाल बराबर।
- **शुद्ध (मूल) रूप:** घर की मुर्गी साग (सब्जी) बराबर।
- **अर्थ और परिवर्तन का कारण:** यह मुहावरा मूलतः एक फ़ारसी कहावत "मुर्ग-ए-खानगी ब-मंजिला-ए-सब्जी" का हिन्दी रूपांतरण है। इसका अर्थ था कि घर में पाली हुई कीमती मुर्गी की भी कोई कद्र नहीं होती, लोग उसे घर में उगने वाले सस्ते 'साग' (सब्जी) के समान ही महत्वहीन समझते हैं। लेकिन उत्तर भारत में जब यह कहावत आम हुई, तो लोगों ने 'साग' की जगह यहाँ के रोजमर्रा के मुख्य भोजन 'दाल' को रख दिया। आज हम इसे 'दाल बराबर' ही कहते हैं।

#### 4. हाथ कंगन को आरसी क्या

- **प्रचलित (अशुद्ध) रूप:** लोग अक्सर तुकबंदी (Rhyming) के चक्कर में या अज्ञानतावश इसका अर्थ बिगाड़कर "हाथ कंगन को आलसी क्या" या "हाथ कंगन को फ़ारसी क्या" बोल देते हैं।
- **शुद्ध (मूल) रूप:** हाथ कंगन को **आरसी** क्या। (पूरा रूप: हाथ कंगन को आरसी क्या, पढ़े-लिखे को फ़ारसी क्या)।
- **अर्थ और परिवर्तन का कारण:** 'आरसी' का अर्थ होता है—अंगूठे में पहनने वाला एक विशेष छल्ला (Ring) जिसमें छोटा सा शीशा (Mirror) लगा होता है। पुराने ज़माने में महिलाएँ अपना चेहरा या श्रृंगार देखने के लिए इसका इस्तेमाल करती थीं। मुहावरे का अर्थ है कि यदि आपने हाथ में कंगन पहना है, तो उसे देखने के लिए शीशे (आरसी) की क्या ज़रूरत है? वह तो आपकी आँखों के सामने प्रत्यक्ष है! समय के साथ 'आरसी' आभूषण का चलन खत्म हो गया और लोग इस शब्द का अर्थ भूल गए।

#### 5. तूती बोलना

- **प्रचलित (अशुद्ध) धारणा:** जब किसी व्यक्ति का बहुत प्रभाव या दबदबा होता है, तो लोग कहते हैं कि "उसकी तूती बोलती है।" लोग 'तूती' को अक्सर एक छोटी सी **चिड़िया (तोता या मैना जैसी)** समझ लेते हैं।
- **शुद्ध (मूल) उत्पत्ति:** यह मुहावरा किसी पक्षी से नहीं, बल्कि '**तूर्य**' या '**तूतही**' (**तुरही / Trumpet**) नामक एक राजसी वाद्य यंत्र से निकला है।
- **अर्थ और परिवर्तन का कारण:** प्राचीन काल में जब कोई राजा या बड़ा अधिकारी निकलता था, तो उसके प्रभाव और रुतबे को दिखाने के लिए उसके आगे-आगे 'तुरही' (तूतही) बजाई जाती थी। इसी 'तूतही' के बिगड़े हुए उच्चारण 'तूती' को लोगों ने बाद में पक्षी समझ लिया, जबकि इसका असली संबंध राजसी दबदबे और वाद्य यंत्र से है।

इसी प्रकार भाषा विज्ञान में जब कोई शब्द समय के साथ अपना मूल अर्थ पूरी तरह छोड़कर एक नया अर्थ ग्रहण कर लेता है, तो इसे '**अर्थ-परिवर्तन (Semantic Shift)**' कहा जाता है। कई बार हम जिन शब्दों का प्रयोग साहित्य, कविताओं या आम बोलचाल में बेहद सकारात्मक रूप में करते हैं, उनका प्राचीन अर्थ बिल्कुल विपरीत था। आइए कुछ ऐसे ही बेहद दिलचस्प शब्दों की यात्रा पर चलते हैं:

#### 1. साहस (Courage)

- **वर्तमान अर्थ:** बहादुरी, निडरता या वीरता (एक बहुत ही सकारात्मक और महान गुण)।
- **मूल अर्थ:** प्राचीन संस्कृत साहित्य और न्यायशास्त्र (जैसे मनुस्मृति) में 'साहस' का अर्थ था— **बलपूर्वक किया गया अपराध, डकैती या अनुचित कृत्य**। (संस्कृत में: *सहसा कृतं कर्म इति साहसम्*)।

- **परिवर्तन का कारण:** जो व्यक्ति समाज के नियमों को तोड़कर कोई दुस्साहस करता था, उसे 'साहसी' (अपराधी) कहा जाता था। समय के साथ, उस कृत्य से 'अपराध' का नकारात्मक भाव हट गया और सिर्फ 'निडरता' या 'जोखिम उठाने' का भाव रह गया। इसे भाषा विज्ञान में '**अर्थ-उत्कर्ष**' (**Semantic Elevation**) कहते हैं।

## 2. मृग (Deer)

- **वर्तमान अर्थ:** केवल हिरण (Deer)।
- **मूल अर्थ:** प्राचीन काल में 'मृग' का अर्थ था— **कोई भी जंगली जानवर या वन-पशु।**
- **परिवर्तन का कारण:** इसी प्राचीन अर्थ के कारण शेर को आज भी 'मृगराज' या 'मृगेन्द्र' (जानवरों का राजा) कहा जाता है, न कि 'हिरणों का राजा'। शिकार और कस्तूरी की खोज (मृगया) के संदर्भ में हिरण सबसे प्रमुख जानवर बन गया, और धीरे-धीरे यह शब्द केवल हिरण तक सिमट कर रह गया। इसे '**अर्थ-संकोच**' (**Semantic Narrowing**) कहते हैं।

## 3. असुर (Demon)

- **वर्तमान अर्थ:** दानव, राक्षस या बुरी शक्तियां।
- **मूल अर्थ:** ऋग्वेद के शुरुआती हिस्सों में 'असुर' शब्द का प्रयोग देवताओं (विशेषकर वरुण, अग्नि और इंद्र) के लिए एक सम्मानजनक विशेषण के रूप में होता था। इसका अर्थ था— **प्राणवान, शक्तिशाली या दिव्य** ('असु' अर्थात् प्राण)।
- **परिवर्तन का कारण:** पारसी और वैदिक संस्कृतियों के अलगाव के दौरान, देव और असुर शब्दों के अर्थ में भारी टकराव हुआ। जो कभी 'शक्तिशाली देव' का पर्याय था, वह पौराणिक कथाओं (जैसे महाभारत या पुराणों) के आते-आते 'देवताओं के शत्रु' में बदल गया। इसे '**अर्थ-अपकर्ष**' (**Semantic Degradation**) कहते हैं।

## 4. आकाशवाणी (All India Radio)

- **वर्तमान अर्थ:** भारत के राष्ट्रीय रेडियो प्रसारण सेवा का आधिकारिक नाम।
- **मूल अर्थ:** प्राचीन और पौराणिक कथाओं में, देवताओं द्वारा आकाश से की जाने वाली अदृश्य भविष्यवाणी।
- **परिवर्तन का कारण:** 1930 के दशक में जब भारत में रेडियो प्रसारण शुरू हुआ, तो एक ऐसे शब्द की तलाश थी जो अदृश्य आवाज़ का प्रतिनिधित्व कर सके। तब महान कवि सुमित्रानंदन पंत जी के सुझाव पर इस पौराणिक शब्द को एक आधुनिक तकनीक का नाम दे दिया गया। आज यह '**अर्थ-विस्तार**' (**Semantic Broadening**) का एक बेहद शानदार उदाहरण है।

\*\*\*\*\*

# भाषा से परे प्यार...



सुश्री बिसाखा साव, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी  
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

सर्वेक्षण परिवार से जुड़ने से पहले मैं मणिपुर की “बेमा” थी। मणिपुर में

बेटियों को प्यार से बेमा कहते हैं। मणिपुर – एक नई जगह, नई संस्कृति, नई भाषा। जितने दिन मैं मणिपुर में रही, मैं बस घर लौटने का ही सपना देखा करती। सच में, जितने दिन मैं मणिपुर में रही, मन में बस एक ही इच्छा थी – किसी तरह बस वापस घर लौट जाऊँ, अपने कोलकाता। क्यों? उम्म...क्योंकि वहाँ खाना भी अलग लगता था और भाषा भी। न सब्जियां पहचान मे आ रही थी और न ही लोगों के चेहरे। मुझे तो सब एक जैसे लगते थे। हाहाहा.. मज़ाक से परे, वहाँ की अशांति, इंटरनेट बंदी, लगातार होते शटडाउन—इन सबने जीवन को कठिन बना दिया था। कभी कभी तो कोविड से बुरा हाल हो जाता था क्योंकि तब शटडाउन के साथ-साथ इंटरनेट भी नहीं होता था। कभी अचानक सड़क पर बमबारी होने लगती तो कभी जुलूस निकलते। एक बार तो बाढ़ भी आ गया था। हर दिन एक अनिश्चितता के साथ गुजरता था। ऐसा लगता था मानो जीवन थम सी गई है। मेरा जीवंत व्यक्तित्व मानो फीका पड़ने लगा था। वहाँ की परिस्थिति ने मेरी वापसी और कठिन बना दी थी।

उस वक्त मुझे यही लगता था कि यहाँ से जाना ही सबसे बड़ी राहत होगी। पर जब सच में वहाँ से जाने का समय आया, तब एहसास हुआ कि यह विदाई इतना आसान नहीं है। जब मैं वहाँ से जा रही थी, मुझे एहसास हुआ कि विदाई सिर्फ एक जगह छोड़ना नहीं है, बल्कि उन भावनाओं और रिश्तों को छोड़ना है, जो हमारे भीतर बस गए हैं। इससे पहले भी दो बार मैं हॉस्टल में रही तब ऐसा नहीं लगा क्योंकि हम सब अपने अपने घर जा रहे होते थे पर इस बार केवल मैं।

जिस तरह मेरे मणिपुर के हॉस्टल और ऑफिस के लोग मुझे प्यार और अपनापन दे रहे थे, वह शब्दों से बयान नहीं किया जा सकता। लेकिन उसी हॉस्टल में मुझे एक बड़ी बहन मिलीं, जिन्हे हिन्दी समझ आती थी। उन्होंने मेरा परिचय दूसरों से करवा दिया। मौका मिलते ही मुझे बाज़ार ले जाना, मणिपुरी खाना खिलाना, वहाँ ही कहानियाँ सुनाना उन्हें बेहद पसंद था। फिर भी, मुझे लगता था कि मैं इन सब से जुड़ नहीं पाऊँगी क्योंकि न मुझे मणिपुरी आती थी न उन्हें हिन्दी या अंग्रेज़ी।

पर मैं गलत थी। धीरे-धीरे, मैं महसूस करने लगी कि प्यार को शब्दों की ज़रूरत नहीं होती। जब मैं वहाँ से आ रही थी, सब मुझसे गले तो मिल रहे थे लेकिन कुछ कह नहीं पा रहे थे। पर उस दिन उनकी वो चुप्पी चीख-चीख कर मुझसे बातें कर रही थी। वें मेरे चेहरे पर अपना हाथ फेर रहे थे। मानो वे दिल से मुझे आशीर्वाद दे रहे हो, आँखों में नमी लिए मुझे वापस मिलने जल्द बुला रहे हों। होंठों की मुस्कान उनका मेरे घर वापसी की खुशी भी दर्शा रही थी।

ऑफिस में मैं अकेली लड़की थी, लेकिन सबने मुझे अपनी बेटा की तरह अपनाया। यह एहसास कि प्यार, अपनापन और सम्मान को शब्दों की ज़रूरत नहीं, मुझे आज भी बहुत याद है।

विदाई हमेशा कठिन होती है, लेकिन साथ ही यह हमें याद दिलाती है कि हम जिन लोगों और जगहों से जुड़े हैं, उनके अनुभव हमारे अंदर हमेशा जीवित रहते हैं।

जिन परिस्थितियों से मैं घबराती थी, उन्हीं के बीच पता नहीं कब मैंने बहुत कुछ सीखा। वहाँ के लोगों की सादगी, उनकी मजबूती, और हर हाल में मुस्कुराते रहने की उनकी आदत – ये सब धीरे-धीरे मेरे जीवन का हिस्सा बन गए थे जिसे मैं अपना ले ली थी।

कठिन समय में भी किस तरह लोग एक-दूसरे का सहारा बनते हैं, मैंने वहीं देखा। कम संसाधन में कैसे जीया जाए यह सीखा। मणिपुर ने मुझे केवल अनुभव ही नहीं दिए, बल्कि मुझे भीतर से थोड़ा और मजबूत भी बनाया।

जब मैं वहाँ से लौट रही थी, तब मुझे यह एहसास हुआ कि मैं अपने साथ केवल सामान नहीं, बल्कि अनगिनत यादें, सीख और भावनाएँ लेकर जा रही हूँ। कभी-कभी हम किसी स्थान को छोड़ना चाहते हैं, लेकिन वह स्थान हमारे भीतर बस जाता है।

कोलकाता मेरा घर है, मेरी पहचान है – लेकिन मणिपुर ने भी मेरे मन में एक खास जगह बना ली है। शायद यही जीवन की सच्चाई है- हम जहाँ भी जाते हैं, वहाँ से कुछ न कुछ अपने भीतर लेकर लौटते हैं। कभी-कभी प्यार और अपनापन को सिर्फ महसूस करना ही काफी होता है। क्योंकि प्यार भाषा से परे है।

\*\*\*\*\*

## एक कुर्सी, कई कहानियाँ

सुश्री देबांजना चक्रवर्ती, एम.टी.एस  
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



हम रोज जिस

कुर्सी पर बैठते हैं, शायद वही हमारी सबसे बड़ी गवाह होती है—हमारी शुरुआत, हमारे संघर्ष और हमारी पहचान की।

आज सुमिता जी का सरकारी सेवा में आखिरी दिन था। ऑफिस का वही कमरा, वही टेबल, वही फाइलों की खुशबू... और वही कुर्सी, जिस पर वह पिछले तीस वर्षों से बैठती आ रही थीं। वह धीरे से आकर अपनी कुर्सी पर बैठीं। आज उनके बैठने में जल्दबाजी नहीं थी—बल्कि एक ठहराव था, जैसे समय खुद पीछे मुड़कर देख रहा हो।

उन्हें अपना पहला दिन याद आया—जब वह पहली बार इस दफ्तर में आई थीं। चेहरे पर उत्साह था, आँखों में सपने... सब कुछ नया था—काम भी, लोग भी, और जिम्मेदारियाँ भी। तब यह कुर्सी सिर्फ एक सीट थी—जहाँ बैठकर उन्हें खुद को साबित करना था।

समय धीरे-धीरे आगे बढ़ता गया।

कुछ सालों बाद, वही कुर्सी जिम्मेदारियों का केंद्र बन गई। अब काम सिर्फ सीखने का नहीं था, बल्कि संभालने का था। फाइलें बढ़ीं, फैसले महत्वपूर्ण हुए, और उनके अनुभव की अहमियत भी। उन्होंने सीखा कि काम में केवल तेजी नहीं, समझ और संतुलन भी जरूरी होता है। बीच के वर्षों में, यही कुर्सी उनकी पहचान बन गई। लोग उन्हें उनके पद से नहीं, उनके काम और व्यवहार से पहचानने लगे।

उन्होंने कई नए लोगों को आते-जाते देखा, कई बदलाव देखे—प्रणालियों में, तकनीक में, और सोच में भी। लेकिन एक चीज हमेशा स्थिर रही—उनका समर्पण। धीरे-धीरे उन्हें यह एहसास हुआ कि सरकारी सेवा सिर्फ नौकरी नहीं होती, यह समाज के साथ जुड़ने का एक माध्यम होती है।

आज, तीस साल बाद, जब वह उसी कुर्सी पर बैठी थीं, तो काम कम था... लेकिन यादें बहुत थीं। हर फाइल, हर निर्णय, हर दिन—जैसे उनके जीवन का एक हिस्सा बन चुका था। उन्होंने धीरे से कुर्सी के हथके पर हाथ फेरा—मानो अपने पूरे सफर को महसूस कर रही हों। कुछ ही देर में, उन्होंने उठकर अपनी चीजें समेट लीं।

तभी एक नई कर्मचारी कमरे में आई—उत्साह, ऊर्जा और नए सपनों के साथ। वह उसी कुर्सी पर बैठ गई। सुमिता जी ने उसे देखा... और हल्की सी मुस्कान आई। क्योंकि उन्हें पता था—कहानी खत्म नहीं हुई है, बस आगे बढ़ गई है।

और शायद यही जीवन का सबसे सरल और गहरा सत्य है—जगह वही रहती है, लोग बदलते हैं... लेकिन हर व्यक्ति अपने समय में उस जगह को अर्थ दे जाता है। कुर्सी सिर्फ एक स्थान है—लेकिन उस पर बिताए गए वर्षों की मेहनत, धैर्य और ईमानदारी... एक ऐसी पहचान बना जाते हैं, जो पद से नहीं, व्यक्तित्व से जानी जाती है। “पद बदलते हैं, कुर्सियाँ बदलती हैं... लेकिन ईमानदारी से किया गया काम हमेशा लोगों की यादों में बना रहता है।”

समाज के लिए शायद यही सबसे बड़ा संदेश है—हर कार्य, चाहे छोटा हो या बड़ा, अगर ईमानदारी और समर्पण से किया जाए, तो उसका प्रभाव केवल दफ्तर तक सीमित नहीं रहता, बल्कि लोगों के जीवन को भी छूता है।

इसलिए, जहाँ भी हम काम करें, जिस भी भूमिका में हों—हमें यह याद रखना चाहिए कि हम सिर्फ अपनी जिम्मेदारी नहीं निभा रहे, बल्कि समाज के प्रति अपना योगदान भी दे रहे हैं।

\*\*\*\*\*

# चाट



श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक  
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

चाट चटपटी पापड़ी,  
निराली उसकी बात री।  
सबके मन को ललचाता,  
कौन नहीं जिसको ये भाता।

पर बात उठी जब चाट की,  
तो कई प्रकार हैं चाट की।  
एक तो, चटपटा, बेहद तीखा,  
और कुछ खट्टा, कुछ मीठा।  
सब के जी को ललचाए,  
कौन नहीं जो इसको खाए।

दूजे चाट की बात निराली,  
बढ़ाए सुन्दर गाल की लाली।  
देनेवाला तमक के आए,  
खानेवाला ही पछताए।

अरे एक चाट तो ऐसा अजूबा,  
आपने शायद देखा परखा भी होगा।  
इसे हाथ या चम्मच नहीं  
खिलाते मीठे बोल हैं  
पर इसकी गाथा तो अनमोल है,  
इसके आगे बड़े-बड़े, बिकते बिन मोल हैं।

शुभेश को तो पहली वाली,  
बस चटपटी चाट से सरोकार है।  
बाकी से राम बचाएं,  
फिर अपनी नैया पार है।।

\*\*\*\*\*

# एक राष्ट्र और एक कलाकार

हम भागे तो कहाँ भागे ,  
हम बहे तो कहाँ बहे ,  
एक रोक जो लगाई है  
इस तूफ़ान ने ;  
बस भीतर ही भीतर जलते रहे ।

श्रीमती सुपर्णा रॉय, प्रवर श्रेणी लिपिक  
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



बांसुरी जो बन्दूके बन गए ,  
और पड़ोसी बने हत्यारे ,  
जिनके हाथ पहले से रंगे हो खून से ;  
वो फूलों को क्या पहचाने ।

क्या है हमारी सच्ची पहचान ,  
क्या है हमारा सच्चा धर्म ,  
जब बांटे थे जमीन, आत्माए भी बांटे ;  
कैसे भरे यह गहरे जखम ।

सभी धरे अब हाथ पे हाथ ;  
पार करेंगे कौनसा तट ?  
न कोई मंदिर है, न कोई मस्जिद ;  
राष्ट्र की है यह विशाल चौखट ॥

\*\*\*\*\*



# बहुत एहसान है उनके मुझ पर

सुश्री बिसाखा साव, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी  
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



खयालों में उड़ने की आदत थी मेरी,  
उन्होंने जमीन पर चलना सिखाया था,  
चाँद की चाँदनी से ही वाकिफ थे हम,  
उन्होंने सूरज सा जलना सिखाया था।

बुरे हालातों में लिपट कर जब-जब हारने लगे थे हम,  
उन्होंने भरे अंधेरे में भी संभलना सिखाया था,  
और खुद के लिए लड़ने की सीख तो दुनिया भी देती है,  
उन्होंने कई जगहों पर पिघलना सिखाया था।

नफरत की इस दुनिया में हर कोई पाप का साथी है,  
उन्होंने वक्त के साथ बदलना सिखाया था,  
शायद उड़ते-उड़ते जमीन पर गिरना ज्यादा चोट देता,  
उन्होंने जमीन पर चलना सिखाया था।

बहुत एहसान है उनके मुझ पर, जिन्होंने मुझको चलना सिखाया था।

\*\*\*\*\*



# हे भगवान

हे भगवान, शिकायतें करूँ या धन्यवाद कहूँ।

मुझे बनाया तो दयावान, परिस्थितियां निर्दयी कर दी।  
बनाया धैर्यवान, नियति में परीक्षाएं भर दी।  
मन का तो धनी बनाया, पर दरिद्रता नाम कर दी।  
मन तो स्वतंत्र ही रहा, तन नियति के अधीन कर दी।

चलो धन्यवाद ही कहता हूँ।  
सादर चरण गहता हूँ।

समस्या और समाधान का,  
मूढ़ता और सहज ज्ञान का,  
सम भाव दे रहे हो।  
उलझनें तो दी, सुलझा भी खुद रहे हो।  
अंधियारे में प्रकाश लेकर, स्वयं ही खड़े हो।

मालिक, मेरी अर्जी का, सार बस यही है।  
जितना दुःख मिला है, तेरी चरण गही है।

तेरी कृपा का सागर हिलोरे ले रहा है,  
दुःख दारिद्र देकर मुझको,  
अपने शरण में ला रहे हो।  
धन्य हो प्रभु तुम तो,  
जो अपना बना रहे हो।

'शुभेश' की है विनती  
बस कृपा इतनी करना  
संकट विकट हो कितना  
तुम सर पे हाथ रखना।



श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक  
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

\*\*\*\*\*

# ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

26 सितंबर 1820

को बंगाल के मिदनापुर जिले  
के बिरसिंघ गाँव में इश्वर चंद्र

श्री स्वपन कुमार सरकार, कार्यालय अधीक्षक  
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



बंदोपाध्याय का जन्म हुआ था। उनके पिता ठाकुरदास बंदोपाध्याय और माता भगवती देवी बहुत धार्मिक व्यक्ति थे। परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण, इश्वर को अपने बचपन के दिन बुनियादी संसाधनों की कमी में बिताने पड़े। इन सबके बीच, इश्वर चंद्र एक ज़िद्दी लड़का था जिसमें शानदार बुद्धि थी और उसने अपनी ज़िद को अपनी पढ़ाई में केंद्रित किया। उनका मसतस्क बड़ा होने के कारण उनके गाँव के लड़का उन्हें जशोरे कई (मछली) भी बुलाते थे। उन्होंने गाँव के पाठशाला में संस्कृत की बुनियादी बातें सीखी, इसके बाद 1826 में अपने पिता के साथ कोलकाता की ओर प्रस्थान किए। उनके प्रतिभाशाली और समर्पित छात्र होने के कई कथाएँ हैं। कहा जाता है कि इश्वर चंद्र विद्यासागर ने कोलकाता के रास्ते, मिल-स्टोन के लेबल देखकर अंग्रेजी अंकों को सीखा। उनके पिता ठाकुरदास अपने पुत्रों के साथ कोलकाता के बर्बाबाजार क्षेत्र में रहते थे और क्योंकि पैसों की कमी थी, इसलिए इश्वर चंद्र विद्यालय के छुट्टी के बाद घर के कामों में मदद करते थे और रात में गैस लाइट वाली स्ट्रीट लैंप के नीचे पढ़ाई करते थे। वह ऐसा अगले दिन खाना बनाने के तेल बचाने के लिए किया करते थे।

विद्यासागर का विवाह चौदह वर्ष की उम्र में दीनामणि देवी से हुआ और उन्हें एक पुत्र हुआ जिसका नाम नारायण चंद्र था।

1841 में, 21 वर्ष की आयु में, ईश्वर चंद्र ने फोर्ट विलियम कॉलेज में संस्कृत विभाग के प्रधान पंडित के रूप में कार्यभार संभाला। प्रतिभाशाली दिमाग के धनी होने के कारण उन्होंने जल्दी ही अंग्रेजी और हिंदी में दक्षता प्राप्त कर ली। पांच साल बाद, 1846 में, विद्यासागर ने फोर्ट विलियम कॉलेज छोड़ दिया और संस्कृत कॉलेज में बतौर 'सहायक सचिव' शामिल हो गए। लेकिन एक वर्ष के अंदर ही, कॉलेज सचिव रसूमय 'दत्त' के साथ प्रशासनिक बदलावों के कारण उनका गंभीर टकराव हो गया, जिन्हें उन्होंने सिफारिश की थी। क्यूंकी विद्यासागर कोई ऐसे व्यक्ति नहीं थे जो सत्ता के सामने झुक जाते, उन्होंने कॉलेज अधिकारियों द्वारा अस्वीकृत होने पर पद से ही इस्तीफा दे दिया और फोर्ट विलियम कॉलेज में पुनः नौकरी शुरू की, लेकिन अब प्रधान क्लर्क के पद पर। कॉलेज अधिकारियों के अनुरोध पर वे संस्कृत कॉलेज में बतौर प्रोफेसर लौटें, लेकिन इस शर्त पर कि उन्हें प्रणाली को नया रूप देने की अनुमति दी जाएगी। 1851 में वे संस्कृत कॉलेज के प्राचार्य बने। 1855 में,

उन्होंने अन्य अतिरिक्त जिम्मेदारियों के साथ विशेष स्कूल निरीक्षक के रूप में कर्तव्यों को संभाला और शिक्षा की गुणवत्ता की निगरानी करने के लिए बंगाल के दूरदराज के गांवों की यात्रा की।

उन्होंने संस्कृत कॉलेज में छात्रों के प्रवेश के नियम भी बदलें जिससे गैर-ब्राह्मण छात्र भी प्रतिष्ठित संस्थानों में नामांकन कर पाए। उन्होंने दो पुस्तकें लिखीं 'उपक्रमोनिका' और 'व्याकरण कौमुदी', जिनमें संस्कृत व्याकरण की जटिल अवधारणाओं को सरल पाठनीय बांग्ला भाषा में समझाया गया है। उन्होंने पहली बार कोलकाता में प्रवेश शुल्क और ट्यूशन शुल्क की अवधारणाएं पेश कीं। उन्होंने शिक्षकों को प्रशिक्षण देने के लिए नॉर्मल स्कूल स्थापित किए, जिससे शिक्षण विधियों में समानता आई। उप-महाधिवक्ता के कार्यालय में अपने संपर्कों के माध्यम से वे अपने छात्रों को सरकारी कार्यालयों में नौकरियां पाने में मदद करते थे। वह घर-घर गए, परिवारों के प्रधान से उनकी बेटियों का स्कूलों में नामांकन करवाने का अनुरोध किया। उन्होंने पूरे बंगाल में महिलाओं के लिए 35 विद्यालय की नींव रखें और 1300 छात्रों को नामांकित करने में सफल रहें। उन्होंने इस उद्देश्य को सफल बनाने के लिए 'नारी शिक्षा भंडार' की भी शुरुआत की। उन्होंने भारत में पहला स्थायी बालिका विद्यालय, बेथ्यून स्कूल, जिसकी शुरुआत 7 मई, 1849 को हुई उसके स्थापना हेतु जॉन एलीट ट्रिंकवाटर बेथ्यून के समर्थन को बनाए रखा।

उन्होंने ब्राह्मणिक अधिकारियों को चुनौती दी और साबित किया कि विधवा पुनर्विवाह वैदिक शास्त्रों में मान्य है। उन्होंने अपने तर्क ब्रिटिश अधिकारियों के सामने रखा और उनकी याचिकाएं सुनी गईं और 26 जुलाई, 1856 को हिंदू विधवाओं के पुनर्विवाह संबंधी अधिनियम, 1856 या अधिनियम XV, 1856 लागू किया गया। वें यहीं नहीं रुके। उन्होंने कई परिवारों के बाल या किशोरी विधवाओं का विवाह भी करवाया और उदाहरण स्थापित करने के लिए 1870 में अपने बेटे नारायण चंद्र का विवाह भी एक किशोरी विधवा के साथ करवाया। उन्होंने सुप्रसिद्ध बांग्ला कवि माइकल मधुसूदन दत्त की फ्रांस से इंग्लैंड जाने और बार की पढ़ाई करने में मदद भी की। उन्होंने उनकी भारत वापसी को भी सुगम बनाया और उन्हें बांग्ला में कविता लिखने के लिए प्रेरित किया, उन्होंने कुछ सबसे पौराणिक साहित्यिक कृतियाँ रची हैं। माइकल मधुसूदन ने विद्यासागर को उनके निःस्वार्थ परोपकारिता भाव के लिए 'दया सागर' की उपाधि भी दी।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर (1820-1891) बंगाल पुनर्जागरण के स्तंभों में से एक थे जिन्होंने 1800 के दशक की शुरुआत में राजा राममोहन राय द्वारा शुरू किए गए सामाजिक सुधार आंदोलन को आगे बढ़ाया। विद्यासागर एक प्रसिद्ध लेखक, विचारक और सबसे पहले मानवता के कट्टर समर्थक थे। उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली था एवं उनके समय की ब्रिटिश प्राधिकरणों द्वारा भी उन्हें सम्मानित किया जाता था। उन्होंने बंगाली शिक्षा प्रणाली

में क्रांति ला दी और बांग्ला भाषा के लेखन और शिक्षण के तरीके बदल दिए। उनकी पुस्तक 'वर्ण परिचय' (अक्षर परिचय) आज भी बांग्ला वर्णमाला सीखने के लिए प्रारंभिक पाठ के रूप में इस्तेमाल की जाती है। 'विद्यासागर' (ज्ञान का महासागर) की उपाधि उन्हें कई विषयों में उनकी व्यापक विद्या के कारण दी गई। कवि माइकल मधुसूदन दत्ता ने ईश्वर चंद्र के बारे में लिखते हुए कहा- "एक प्राचीन ऋषि की प्रतिभा और बुद्धिमत्ता, एक अंग्रेज की ऊर्जा और एक बंगाली माँ का हृदय"।

उन्होंने 1829 से 1841 के दौरान संस्कृत कॉलेज में वेदांत, व्याकरण, साहित्य, व्यक्तित्व कला, स्मृति और नैतिकता की शिक्षा ली। उन्होंने नियमित छात्रवृत्ति अर्जित की और बाद में अपने परिवार की वित्तीय स्थिति का समर्थन करने के लिए जोरासांको के एक स्कूल में शिक्षक का पद संभाला। उन्होंने 1839 में संस्कृत के एक प्रतियोगिता में भाग लिया और 'विद्यासागर' की उपाधि अर्जित की, जिसका अर्थ है ज्ञान का सागर। उसी वर्ष ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने अपनी कानून की परीक्षा सफलतापूर्वक पास की थी।

एक बार एक अंग्रेज ने उनको निमंत्रण दिया था। वहाँ जाने पर गार्ड ने उनका धोती और कुर्ता पहन कर जाने के कारण उनको अन्दर जाने नहीं दिया। उन्होंने अपने एक दोस्त से मांगे सूट-बूट को पहनकर उस पार्टी में गए और निमंत्रण सभा में बैठ गए। खाना परोसे जाने के बाद भी चुपचाप बैठे रहें। वें कुछ भी नहीं खा रहें थे, यह देखकर निमंत्रणकारी अंग्रेज ने उनसे पूछा, कारण क्या है? इसके जवाब में उन्होंने कहा मैं तो आया हूँ लेकिन धोती कुरता पहने वाले अन्दर घुस नहीं सकते। तो आपके मुताबिक केवल सूट बूट वाले ही खा सकते है ?

ईश्वर चंद्र विद्यासागर, एक महान विद्वान, अकादमिक और सुधारक का, 29 जुलाई, 1891 को 70 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनकी मृत्यु के बाद रवींद्रनाथ टैगोर ने कहा, "मन करता है कि यह सोचें कि भगवान ने जब चालीस मिलियन बंगालियों का निर्माण किया, तो एक आदमी कैसे पैदा किया!" उनका शेष जीवन बिहार के कर्मटर नामक जगह पर बीता। वहाँ आदिवासीयों का निवास था। उनलोगों से भुट्टा खरीद कर जब उनहिलोगों के पास खाने को नहीं होता तो उन्हें खाना खिलाते थे। इसके अलावा उनको मुफ्त होमयोप्याथी दवा देकर चिकित्सा भी करते थे। उनके सम्मान में एक स्टेशन का नाम भी उनके नाम पर रखा गया है, आज भी लोग उन्हें याद करते है।

\*\*\*\*\*

# राधानाथ सिकदर

श्री सुभास चन्द्र साँतरा, मानचित्रकार डिवि.।

पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



राधानाथ सिकदर का जन्म 5 अक्टूबर, 1813 में कलकत्ता (अब कोलकाता) के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता जी का नाम तितुराम सिकदर और माता जी का नाम देबिका सिकदर था। वे सर्वे आफ इंडिया में सेवा देने वाले सबसे प्रतिभाशाली व्यक्तियों में से एक थे। 1831 में कंप्यूटर के रूप से नियुक्त होने बाद उनकी गणितीय प्रतिभा को सर जॉर्ज एवरेस्ट ने पहचाना जिसके बाद 1845 में उन्हें ग्रेट ट्रिगोमेट्रिकल सर्वे के मुख्य कंप्यूटर पद पर पदोन्नति दी गई। लेकिन अंग्रेज अफसरों के तुलना में उनके वेतन में ज्यादा परिवर्तन नहीं हुआ था।

भारतीय गणितज्ञ और सर्वेक्षक राधानाथ सिकदर भारत के महान त्रिकोणमिति सर्वेक्षण में पहले व्यक्ति थे जिन्होंने यह पहचाना की माउंट एवरेस्ट जो कि तब पंद्रहवें शिखर थी, दुनिया की सबसे उंची चोटी हैं, वे 1852 में पर्वत की ऊंचाई की गणना करने वाले पहले व्यक्ति थे। उन्होंने यह भी खोज किया कि कंचनजंघा, जिसे दुनिया की सबसे उंची चोटी माना जाता था, वास्तव में उतनी ऊंची नहीं थी। माउंट एवरेस्ट के बारे में छह बार अवलोकन करने के बाद आंकड़े संकलित करते हुए उन्होंने अंत में यह निकाला कि वास्तव में वही दुनिया की सबसे उंची चोटी हैं। उन्होंने प्रथम शिखर से पंद्रहवें शिखर तक सभी चोटियों को नापा था। सन् 1952 में, चार वर्षों तक गणितीय गणना करने के बाद पंद्रहवें शिखर की उंचाई 29,002 फीट (8,840 मीटर) निर्धारित की थी। तकनीकी रूप से पंद्रहवें शिखर की खोज राधानाथ सिकदर ने ही की थी। लगभग चार साल त्रिकोणमिति गणना करने के बाद इस सिद्धांत में पहुंचे की पंद्रहवें शिखर विश्व में सबसे उंची शिखर हैं। हालांकि सर जॉर्ज एवरेस्ट ने इस पर्वत को कभी नहीं देखा, फिर भी उनका नाम पंद्रहवें शिखर के साथ जुड़ के माउंट एवरेस्ट हो गया।

सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने कोलकाता के पास चंदन-नगर में अपना शेष जीवन बिताया और महिला शिक्षा के प्रसार और स्थानीय समाज के सुधार के लिए जीवन समर्पित कर दिया। 17 मई, 1870 में हार्ट अटैक से उनकी मृत्यु हो गई। यह बहुत दुख की बात है कि राधानाथ सिकदर जी का नाम पंद्रहवें शिखर के साथ जुड़ा नहीं है।

\*\*\*\*\*











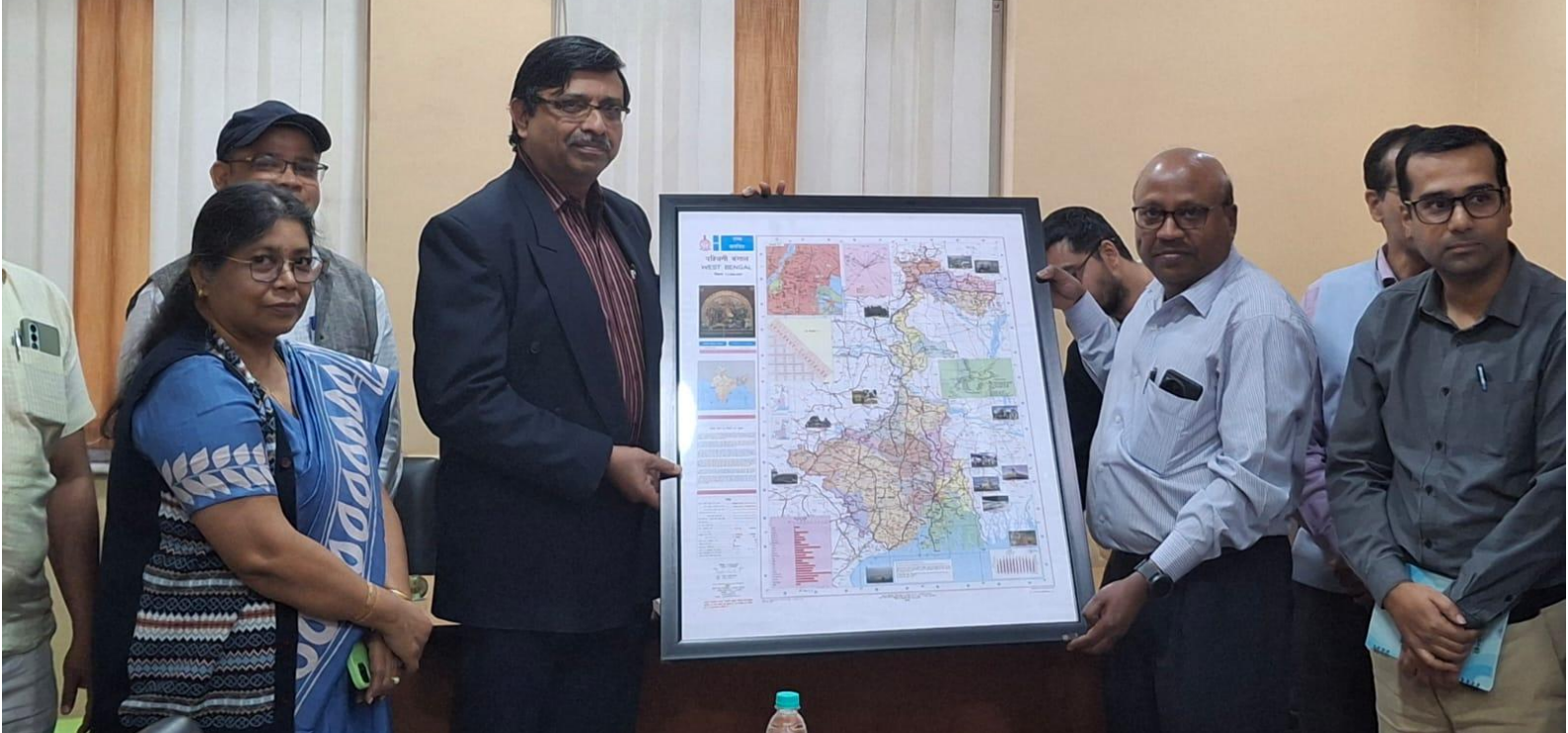










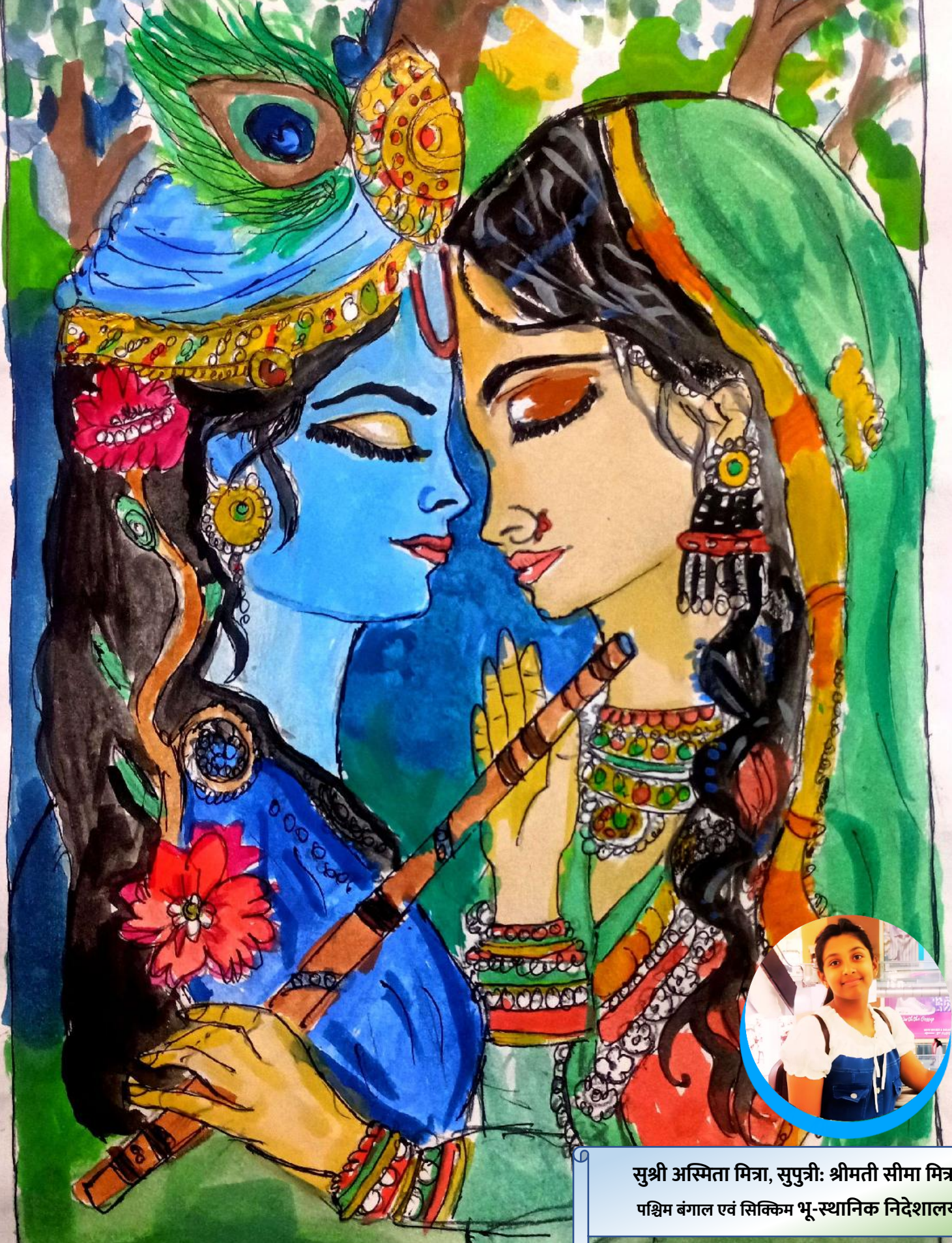






# चित्रांकन

निदेशालय के कर्मियों के बच्चों की चित्रांकन प्रतिभा



सुश्री अस्मिता मित्रा, सुपुत्री: श्रीमती सीमा मित्रा  
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

BAL GANESH



सुश्री आरूणि रॉय: सुपुत्री - श्रीमती सुपर्णा रॉय  
प्रवर श्रेणी लिपिक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



Ray ☺  
9/11/25

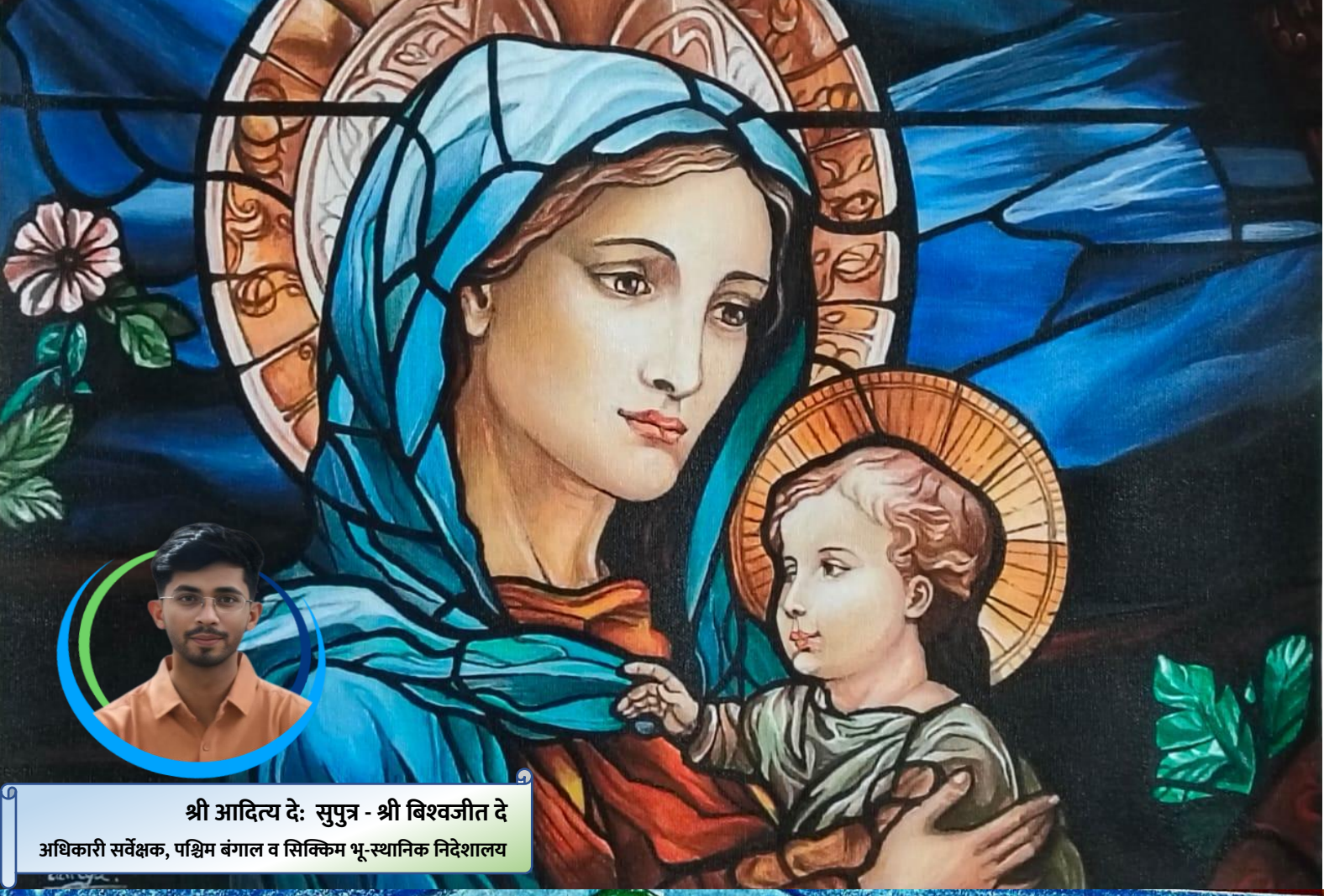


सुश्री शुचि दास: सुपुत्री - श्री शुभेश कुमार  
कार्यालय अधीक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



श्री उदित प्रकाश श्रेयांश, सुपुत्र: श्री शुभेश कुमार  
कार्यालय अधीक्षक, पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय





श्री आदित्य दे: सुपुत्र - श्री विश्वजीत दे  
अधिकारी सर्वेक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



सुश्री आरूणि रॉय: सुपुत्री - श्रीमती सुपर्णा रॉय  
प्रवर श्रेणी लिपिक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



सुश्री प्रीती सरकार: सुपुत्री - श्री स्वपन कुमार सरकार  
कार्यालय अधीक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



सुश्री प्रीती सरकार: सुपुत्री - श्री स्वपन कुमार सरकार  
कार्यालय अधीक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

icide note was found at the spot or on the Lajpat Nagar resident, police said, adding that he was reportedly under considerable mental stress and suffering from depression. An initial probe suggests he might have...

...from South Korea, employed with a logistics company in Greater Noida for the past 10 years, was allegedly stabbed to death by his girlfriend at their Sector 150 flat in the early hours of Sunday after an argument over his drinking habits. The woman called his driver and, along with him, took the bleeding man to hospital, where he was declared dead on arrival. The police have been detailing the case. The victim, a 32-year-old Cheong-Korea and (22) from Jaipur were in a relationship and were married. S Pious...



...ood Disorder. Mitapivat targets the mitochondria at its cellular core by increasing red-cell metabolism rather than only managing consequences. "This could significantly improve quality of life, especially in India where disease burden is high," he said.

Mitapivat works by activating pyruvate kinase, improving energy balance in fragile red blood cells that otherwise break down prematurely in the bloodstream. Phase III trials of "ENERGIZE-T", showing significant rises in haemoglobin and red blood cell transfusion...

...It was an embassy... contact with me... would continue to provide all possible assistance. The response so far has been limited to issuing advisory asking Indian citizens to avoid all non-essential travel to Venezuela and the country to exercise extreme caution in their movements relating to the national affairs...

Russia... been... amor... hos... ro... st... S... Ca... ped...

सुश्री प्रीती सरकार: सुपुत्री - श्री स्वपन कुमार सरकार  
कार्यालय अधीक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



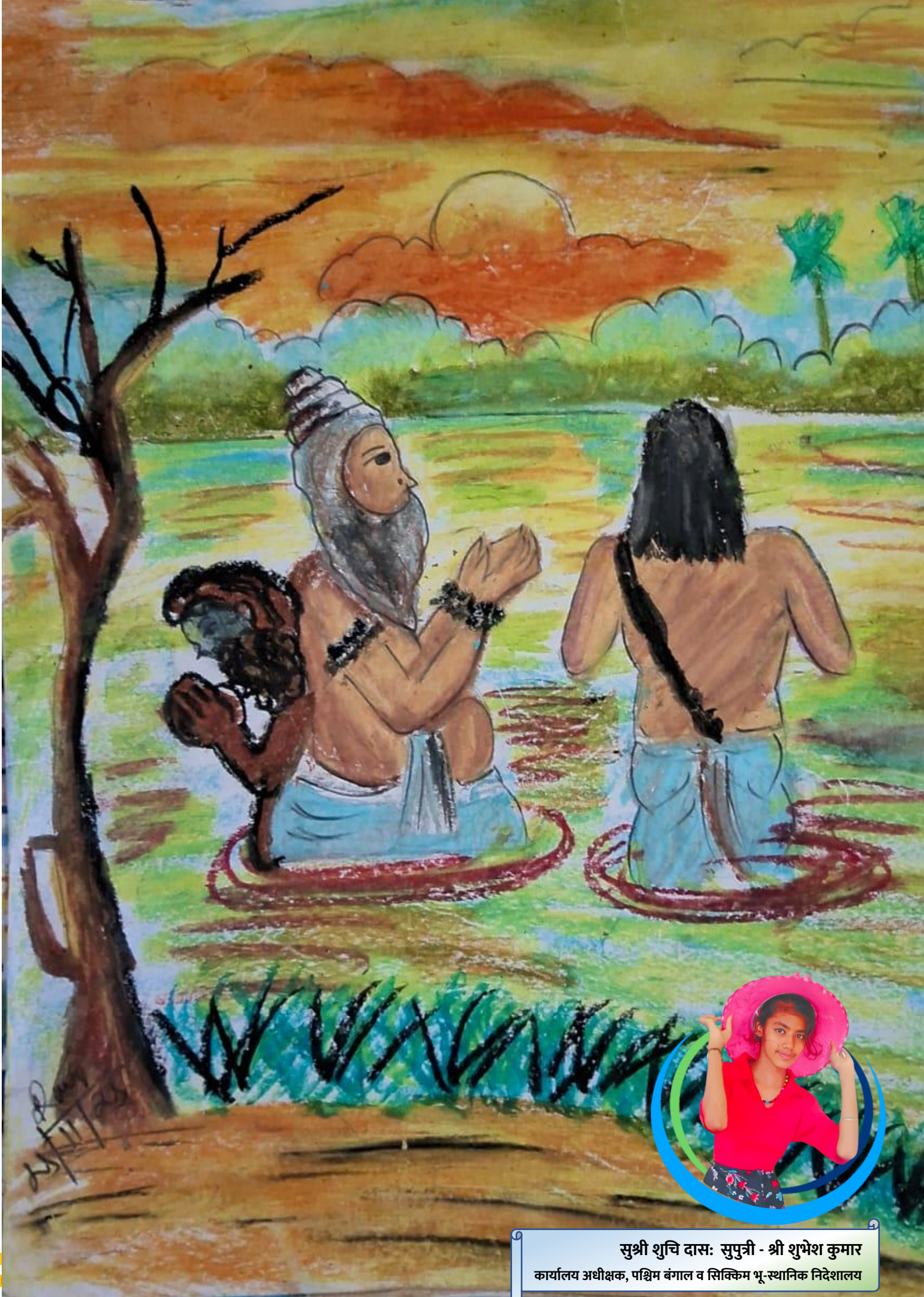
*Preeti Sarkar*



Netaji Subhas Chandra Bose



श्री रेबान्ता मुखर्जी: सुपुत्र - श्रीमती शम्पा मुखर्जी  
कार्यालय अधीक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



सुश्री शुचि दास: सुपुत्री - श्री शुभेश कुमार  
कार्यालय अधीक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



सुश्री शुचि दास: सुपुत्री - श्री शुभेश कुमार  
कार्यालय अधीक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



श्री रेबान्ता मुखर्जी: सुपुत्र - श्रीमती शम्पा मुखर्जी  
कार्यालय अधीक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



श्री आदित्य दे: सुपुत्र - श्री विश्वजीत दे

अधिकारी सर्वेक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

# ‘वंदे मातरम्’

